पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2014-16

ओ३म्

श्रृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-१८, अंकः-४, अक्टूम्बर, सन्-२०१५, सं०-२०७२ वि०, दयानंदाब्द १६१, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११६; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

प्रसंगवश

कवि तो समस्त सत्ताओं का प्रेरक है, मार्गदर्शक है, निर्माता हैं!

साहित्यकार अपनी गरिमा और लेखनी को समझें

-डॉ. वेद प्रकाश आर्य, एम.ए., पी-एच.डी.-

संस्कृत साहित्य शास्त्र के आचार्यों ने 'शिवेतरक्षतए' (आचार्य मम्मट : काव्य प्रकाश) को साहित्य का पवित्र अनुष्ठान माना। ('काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतए') इसी से अनुप्राणित होकर हिन्दी साहित्य के प्रथम आलोक शिखर गोस्वामी तुलसी दास जी ने लोकमंगल की अवधारणा को अपने काव्य की आधार शिला के रूप में स्वीकार किया और 'रामचरितमानस' में साहित्यकार की मर्यादा की सीमारेखा खींचते हुए लिखा-

कीन्हें प्राकृत जन गुन गाना
सिर धुनि गिरा लागि पछिताना।

जिसका अभिप्राय हे कि जब कोई कवि सांसारिक व्यक्तियों के गुणगान में प्रवृत्त होता है तो साहित्य की देवी सरस्वती सिर धुनने लगती है और पश्चाताप करने लगती है कि व्यर्थ में ही मैंने इस कवि को कविता की शक्ति प्रदान की। जिस युग में मुगल सम्राट अकबर द्वारा नवरत्नों द्वारा दरबार सुसज्जित किया जा रहा था; बदले में कवियों को जागीरें दी जा रही थीं; तुलसी ने एक भी छन्द बादशाह की स्तुति में नहीं लिखा, वरन् देश वासियों को अन्याय के विरुद्ध लड़ने के लिए प्रेरित किया-

क्षत्रिय तनु धरि समर सकाना
कुल कलंक तेहि पामर जाना।

हिन्दी के साहित्यकार आगे चलकर गोस्वामी जी के पदचिन्हों का अनुसरण करते हुए मिलते हैं। समसामयिक कवि 'श्रीपति' ने एक छंद में कवियों के आत्मगौरव एवं स्वाभिमान को धार देते हुए एक छंद लिखकर हिन्दी कवियों को अक्षय यश और सम्मान का अधिकारी बना दिया-

अब कै दुनिया गुनियाँ जो बड़ी
वह बाँधइ मोट अटब्बर की।
एक को छाँड़िकै दूज भजै,
औ गिरैं रसना वहि लब्बर की।
'श्रीपति' आसरो तेरो हमैं,
हम ओट गही बड़े जब्बर की।
जिनको हरि सों परतीति नहीं,
वै आस करैं सब अकब्बर की।।

कृष्ण भक्ति शाखा की अष्टछाप कविता के कवियों के तेवर तो और भी तीखे हैं। 'चौरासी वैष्णवान की वार्ता' के अनुसार जब कई बार बुलाने पर भी कुम्भनदास जी बादशाह से मिलने फतेहपुर सीकरी नहीं पहुँचे तो एक विशेष संदेशवाहक के आग्रह पर वे मिलने चले गये। मिलकर जब अपनी कुटिया पर वापस आये तो सत्ता के प्रति जो वितृष्णा का भाव उनके मन में उभरा, उसकी अभिव्यक्ति निम्नांकित दो पंक्तियों में कवि ने कर दी है-

संतन को कहा सीकरी सों काम।
आवत जात पनहिया टूटीं-
बिसरि गयो हरि नाम।।

यह तो हुई उन कवियों की बात, जिनके दो आँखें थीं; किन्तु अब उस कवि के पास चलिए, जो नेत्रहीन था; निपट अंधा था। हिन्दी काव्यगगन के सूर्य माने जाने वाले सूरदास के पास उनकी कीर्ति-सौरभ से आकृष्ट होकर कहते हैं कि स्वयं बादशाह सलामत 'सूरकुटी' पर पधारे। उनके पद-गायन को सुनने के बाद बादशाह अकबर ने कहा- 'सूरदास जी, आपने कृष्ण की लीलाओं पर तो अनेक पदों की रचना की है, एकाध पद मेरे बारे में भी तो सुनायें'। बादशाह के इस आग्रह पर 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' के अनुसार सूरदास जी ने निम्नांकित पद सुनाया-

नाहिंन रह्यौ हिय मैं ठौर,
नंदनंदन अछत कैसे,
आनिये उर और।

'मेरे हृदय में तो कृष्ण के अतिरिक्त कन्य किसी के लिए स्थान ही नहीं है।'

इसी जमाने के एक भक्त कवि ने जिनका नाम नरहरिदास था- एक छप्पय की रचना द्वारा सम्राट अकबर को भारत मे गोवध बंद करने का फरमान जारी कराने का सफल प्रयास किया था। नरहरि दास का वह ऐतिहासिक छप्पय इस प्रकार है-

अरिहुँ दन्त तृण धरहिं,
ताहि मारत नहिं सब्बल कोइ,
हम संतत तृण चरहिं वचन
उच्चरहिं दीन होइ।
अमृत पय नित स्रवहिं,
बच्छ महि थम्मन जावहिं,
हिन्दुहिं मधुर न देहिं,
कटुक तुरकहिं न पियावहिं।
कह कवि 'नरहरि' अकबर सुनहु
बिनवत गौ जोरे करन,
कवन अपराध मोंहि मारियतु
मरेहु चाम सेवहिं चरन।।

नरहरिदास के उपर्युक्त पद में गाय बादशाह अकबर से हाथ जोड़ कर विनती करती है-'अगर दुश्मन भी दाँतों तले तिनका दाब लेता है, तो बलवान पुरुष उसको क्षमा कर देते हैं। हम तो रातदिन तिनका ही दाबती (चरती) रहती हैं। अमृत रूपी दुग्ध हमारे थनों द्वारा मानव जाति को मिलता है और हमारे बछड़े खेती कार्य में प्रयुक्त होते हैं। हम जो दूध मानव जाति को प्रदान करती हैं, उसमें हिन्दू मुसलमान का कोई भेदभाव नहीं होता। और मरने के बाद भी हमारे शरीर के चमड़े से जूते बनते हैं जो मानव जाति के चरणों की सेवा करते हैं।' अगर नरहरि का यह छप्पय जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर को गोहत्या पर पाबंदी के लिए बाध्य कर सकता है; तो आज के कविगण भी अपनी लेखनी में पैनापन लाकर आतंकवादियों देशद्राहियों और बलात्कारियों को ठिकाने लगाने के लिए शासन सत्ता को बाध्य क्यों नही कर सकते?

इतिहास का एक पृष्ठ और पलटते हैं तो सम्राट जहाँगीर के आदेशानुसार कवि गंग को हाथी के पैरों से कुचले जाने का फरमान सामने आता है। इस फरमान से गवि गंग जरा भी विचलित नहीं हुए, वरन् सम्राट द्वारा भेजे गये हाथी को लक्ष्य करके एक छंद बनाकर सुनाया जो आजतक कवि परम्परा एवं सहृदयों को अनुप्राणित करता रहा है-

देवन को दरबार जुर्‌यौ,
तहँ पिंगल छंद बनाय कै गायो,
काहू सों अर्थ कह्यौ न गयो,
तब नारद एक प्रसंग चलायो।
मृत्युलोक में हैं कवि गंग गुनी,
अरु गंग को नाम सभा में सुनायो,
चाह भई परमेसुर को तब,
गंग को लेन गनेस पठायो।

गंग कहते हैं-'यह हाथी नहीं है, साक्षात् गणेश जी हैं जो परमेश्वर के आदेश से मुझे लेने के लिये आ रहे हैं क्योंकि इस समय देवों की सभा हुई हुई है जिसमें एक छंद का अर्थ किसी को सूझ नहीं रहा है।'

तुलसी की परम्परा को अक्षुण्ण रखते हुए महाकवि भूषण काव्य के मर्म का उद्‌घाटन करते हैं। भूषण के अनुसार 'प्राकृत राजाओं का गुणगान करके जिस शारदा की गौरव-गरिमा को कवियों ने धूमिल कर दिया है; उसी शारदा को अत्याचारी औरंगजेब की सत्ता से लोहा लेने वाले छत्रपति शिवाजी महाराज के पवित्र चरित्र रूपी सरोवर में नहला कर मैं पवित्र बना रहा हूँ।'

भूषण सो कलि के कविराजन,
राजन के गुन गाय मसानी।
पुन्य चरित्र सिवा सरजा सर
न्हाय पवित्र भई वर वानी।

यह सही है कि रीतिकाल के अनेक कवि राजाओं के दरबारदारी भी कर रहे थे किन्तु यह भी सही है कि वे समय समय पर राजाओं का मार्गदर्शन करने और कविता द्वारा उनको सत् परामर्श देने में भी नहीं चूकते थे। औरंगजेब ने दक्षिण में जब शिवाजी महाराज का दमन करने के लिए राजा जयसिंह को जाने का हुक्म दिया तो वे बिहारीलाल ही थे जिन्होंने एक दोहा लिखकर महाराजा जय सिंह को बादशाह के हुक्म को मानने से विरत कर दिया था। बिहारी सतसई का वह अन्योक्तिपरक दोहा निम्नांकित है-

स्वारथ सुकृत न, स्रम वृथा
देखु विहंग विचार।
बाज पराये पानि पर
तू पच्छीनु न मान।

'ऐ बाज पक्षी! दूसरों के कहने पर तू अपने पक्ष के पक्षियों की हत्या मत कर; क्योंकि इसमें न तो कोई तेरा स्वार्थ सिद्ध हो रहा है, न पुण्य प्राप्त हो रहा है और तेरा श्रम पुरुषार्थ भी व्यर्थ सिद्ध हो रहा है।'

आधुनिक युग यानी उन्नीसवीं-बीसवीं शताब्दी में भी कवियों ने लेखनी की गौरव गरिमा और मर्यादा को स्वर्णिम

(शेष पृष्ठ ३ पर...)

विनय पीयूष

तू भी अपनी प्यास बुझा ले !

यथा गौरो अपाकृतं तृष्यन्नेत्पवेरिणम्।
आपित्वे नः प्रपित्वे तूयमागहि कण्वेषु सु सचा पिब।।
(साम. पू. : 3/2/10)

तू भी अपनी प्यास बुझा ले !

जैसे मृग को मिले जलाशय,
हमें मिला भक्तों का आश्रय,
जाग बन्धु, अब देर न कर कुछ,
अमृत पी ले, प्राण जुड़ा ले !

तू भी अपनी प्यास बुझा ले !

काव्यानुवाद : अमृत खरे

आर्य्य लोक वार्ता : पत्र नहीं स्वाध्याय है - एक नया अध्याय है।

सम्पादकीय

शताब्दी का एक वर्ष

आर्य समाज रूपी विशाल वटवृक्ष की एक डाली है- आर्य समाज, डालीगंज लखनऊ। स्थापना के सौ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में अभी अभी १६,१७,१८ सितम्बर, २०१५ को इस आर्य समाज की शताब्दी का समारोह महोत्सव के रूप में मनाया गया। आर्य समाज डालीगंज के सौ वर्षों के इतिहास में १९५७ से १९६१ तक पाँच वर्षों का समय ऐसा है; जिसका मेरी जीवन-यात्रा से गहरा संबन्ध रहा है। इन पाँच वर्षों में भी १९५७-५८ एक वर्ष के अन्तराल में कई महत्त्वपूर्ण घटनाएँ ऐसी घटित हुईं; जिन्होंने शताब्दी के इस वर्ष को चिर स्मरणीय एवं ऐतिहासिक बना दिया।

जुलाई १९५७ में मैंने बी.ए.प्रथम वर्ष लखनऊ विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया और श्री देवीप्रसाद आर्य के सान्निध्य में आर्य समाज डालीगंज के विशेष सम्पर्क में आया ही था कि हिन्दी आन्दोलन की दुंदुभी बज गयी। आर्य समाज के क्षेत्र में उन दिनों चार नेताओं की धूम थी- प्रकाशवीर शास्त्री, ओम प्रकाश पुरुषार्थी, लाला रामगोपाल शालवाले और पं.नरेन्द्र। चारों प्रभावशाली वक्ता थे और आर्य जनता पर उनका जबर्दस्त प्रभाव था; उत्सवों की सफलता के चारों नेता गारंटी माने जाते थे। इन्हीं के प्रयत्नों से हिन्दी आन्दोलन का बिगुल बजा। भाई देवी प्रसाद जी- आर्य समाज डालीगंज के प्रमुख अधिकारी थे, साथ ही आर्य वीर दल उ.प्र.के उपसंचालक भी थे। हिन्दी आन्दोलन को धारदार बनाने के लिए भाईजी ने एक समाचार पत्र प्रकाशित करने का निश्चय किया। वे इलाहाबाद बैंक, हजरतगंज में उन दिनों कार्यरत थे। उन दिनों 'चक्र मुद्रण' यानी साइक्लोस्टाइल की नयी प्रणाली आयी थी। फलतः एक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन शुरू किया गया जिसको डालीगंज आर्य समाज में तैयार किया जाता और साइक्लोस्टाइल करा कर विभिन्न आर्य समाजों में भेजा जाता था। इसका सम्पादक मुझे बनाया गया- अखबार का नाम रखा गया 'आर्य राष्ट्र'। यद्यपि कुछ ही अंक निकल पाये होंगे कि मुझे हिन्दी सत्याग्रह में भाग लेकर कारागार जाना पड़ा और पत्र का प्रकाशन रुक गया। तथापि १९५७ में जिस 'आर्य राष्ट्र' के प्रकाशन का श्रीगणेश हुआ था- वही सन् १९९८ में ४१ वर्ष बाद विधिवत् 'आर्य लोक वार्ता' के रूप में प्रारंभ हुआ और आज २०१५ में १७ वर्ष पूर्ण करके आपके हाथों में है। बिना विज्ञापन के किसी मासिक पत्र का इतने दिनों तक अनवरत प्रकाशित होते रहना- हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास की एक सुखद घटना है।

इसी वर्ष की एक अन्य घटना भी विलक्षण है। हिन्दी आन्दोलन- हिन्दी सत्याग्रह में वदल गया और जगह जगह से हिन्दी सत्याग्रहियों के जत्थे पंजाब की तरफ प्रस्थान करने लगे। एक उत्साहप्रद वातावरण आर्य समाज में दृष्टिगोचर होने लगा। आल्हखंड की एक पंक्ति याद आ रही है-

'औरि बयरिया डोलन लागी, औरै होन लाग व्यवहार'

संध्या-हवन-यज्ञ करने वाले आर्य समाजी कारागारों की शोभा बढ़ाने लगे। लखनऊ में सभाएँ बहुत हो रही थीं किन्तु सत्याग्रह करने हेतु जाने में लोग हिचक रहे थे। मैं अभी विश्वविद्यालय में आया ही था- किन्तु इस हिचक को तोड़ने का काम मेरे द्वारा पूरा हुआ। मैं पढ़ाई को अल्पविराम देकर सत्याग्रह हेतु तैयार हुआ और मेरे साथ आर्य समाज सदर के श्री देवव्रत शास्त्री भी थे। हमलोगों ने रोहतक में सत्याग्रह किया।

रोहतक कारागार की बैरक ३ में सभी हिन्दी प्रेमी सत्याग्रही ही थे। एक दिन 'सी' श्रेणी की इसी बैरक में गुजारना पड़ा- हाथी के कान बराबर दो पतली रोटियाँ, गोभी के डंठलों वाली पतली सब्जी तथा पानी जैसी दाल का स्वाद चखने के बाद अगले दिन मजिस्ट्रेट ने मुझे 'बी' श्रेणी दे दी क्योंकि मेरे पास संयोगवश लखनऊ विश्वविद्यालय का परिचय पत्र था। 'बी' श्रेणी स्वीकृत होने के बाद भी मैंने 'सी' श्रेणी में ही रहना जारी रखा। 'बी' श्रेणी में जो दूध मुझे मिलता था; वह मैं अपने साथ जत्थे में आये हुए आर्य समाज आजमगढ़ के दो वयोवृद्ध सत्याग्रहियों को देने लगा। इनके नाम थे महाशय गुरुदत्त और विश्वनाथ गुप्ता। प्रतिदिन अपराह्न २ बजे से सभा होती थी जिसमें प्रायः सभी मेरे प्रशंसक थे किन्तु वयोवृद्ध गुरुदत्त और विश्वनाथ जी तो भक्त ही बन गये थे। दोनों व्यक्तियों ने कहा- सत्याग्रह समाप्ति के पश्चात् हमलोग आपको आर्य समाज आजमगढ़ के उत्सव पर आमंत्रित करने हेतु मंत्री श्री अक्षयबर नाथ जी से कहेंगे।

बताते चलें कि आर्य समाज आजमगढ़ का वार्षिक उत्सव उन दिनों इतना भव्य, विशाल और आकर्षक होता था कि प्रख्यात वक्ताओं को ही आमंत्रित किया जाता था। उन दिनों- प्रकाशवीर शास्त्री, ओमप्रकाश पुरुषार्थी, शिव कुमार शास्त्री, वाचस्पति शास्त्री, ओम प्रकाश शास्त्री, रामनारायण शास्त्री, आचार्य रामानन्द शास्त्री, आर्यभिक्षु जी के व्याख्यानों की धूम थी। मेरे जैसे नये व्यक्ति के लिए कहाँ जगह थी? तथापि गुरुदत्त और विश्वनाथ जी ने अपना वचन निभाया और तीन वर्ष बाद १९६० में उन्हें सफलता मिली और जबकि मंत्री आर्य समाज श्री अक्षयबरनाथ आर्य ने वार्षिक उत्सव का मुझे आमंत्रण भेजा। आजमगढ़ के विशाल समारोह में व्याख्यान का अनुभव रोमांचक था। इसका परिणाम यह हुआ कि १९६१ में जैसे ही मेरा एम.ए. अन्तिम वर्ष का परीक्षाफल निकला और मैं प्रथम श्रेणी (हिन्दी साहित्य) में उत्तीर्ण हुआ, मुझे आजमगढ़ आर्य समाज द्वारा संचालित डी.ए.वी.इं. कालेज में प्रवक्ता हेतु बुला लिया गया।

१९६८ में जब मेरी पदोन्नति पोस्टग्रेजुएट कालेज में हुई और डी.ए.वी.इं. कालेज में हिन्दी प्रवक्ता पद रिक्त हुआ तो मेरे प्रयत्नों से आर्य समाज डालीगंज के सदस्य श्री पवन कुमार को, जो उन दिनों दुर्गा गीता विद्यालय बाबूगंज लखनऊ में जूनियर विभाग में अध्यापन कर रहे थे, डीएवी इंटर कालेज आजमगढ़ में प्रवक्ता पद पर नियुक्ति मिल गई। वस्तुतः यह चमत्कारिक कार्य- आर्य समाज डालीगंज, लखनऊ के सान्निध्य में ही संभव हुए; जिसकी स्थापना की शताब्दी अभी अभी मनाई गई है।

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१६१

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में सप्तम समुल्लास का अंश

(प्रश्न) परमेश्वर को आप निराकार मानते हो वा साकार?

(उत्तर) निराकार मानते हैं।

(प्रश्न) जब निराकार है तो वेदविद्या का उपदेश बिना मुख के वर्णोच्चारण कैसे हो सका होगा? क्योंकि वर्णों के उच्चारण में ताल्वादि स्थान, जिव्हा का प्रयत्न अवश्य होना चाहिये।

(उत्तर) परमेश्वर के सर्वशक्तिमान् और सर्वव्यापक होने से जीवों को अपनी व्याप्ति से वेदविद्या के उपदेश करने में कुछ भी मुखादि की अपेक्षा नहीं है। क्योंकि मुख जिव्हा से वर्णोच्चारण अपने से भिन्न को बोध होने के लिए किया जाता है, कुछ अपने लिये नहीं। क्योंकि मुख जिव्हा के व्यापार करे बिना ही मन में अनेक व्यवहारों का विचार और शब्दोच्चारण होता रहता है। कानों को अंगुलियों से मूँद देखो, सुनो कि बिना मुख जिव्हा ताल्वादि स्थानों के कैसे कैसे शब्द हो रहे हैं। वैसे जीवों को अन्तर्यामीरूप से उपदेश किया है। किन्तु केवल दूसरे को समझाने के लिये उच्चारण करने की आवश्यकता है। जब परमेश्वर निराकार सर्वव्यापक है तो अपनी अखिल वेदविद्या का उपदेश जीवस्थ स्वरूप से जीवात्मा में प्रकाशित कर देता है। फिर वह मनुष्य अपने मुख से उच्चारण करके दूसरों को सुनाता है। इसलिये ईश्वर में यह दोष नहीं आ सकता।

(प्रश्न) किनके आत्मा में कब वेदों का

वेद-विषय

प्रकाश किया?

(उत्तर) **अग्नेर्वा ऋग्वेदो जायते वायोर्यजुर्वेदः सूर्यात्सामवेदः।।शत.।।** प्रथम सृष्टि के आदि में परमात्मा ने

अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा- इन ऋषियों के आत्मा में एक-एक वेद का प्रकाश किया।

(प्रश्न) **यो वै ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै।।**

यह उपनिषद का वचन है- इस वचन से ब्रह्मा जी के हृदय में वेदों का उपदेश किया है। फिर अग्न्यादि ऋषियों के आत्मा में क्यों कहा?

(उत्तर) ब्रह्मा के आत्मा में अग्नि आदि के द्वारा स्थापित कराया। देखो! मनु में क्या लिखा है-

अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रयं सनातनम्।
दुदोह यज्ञसिद्ध्यर्थमृग्यजुःसामलक्षणम्।।

जिस परमात्मा ने आदि सृष्टि में मनुष्यों को उत्पन्न करके अग्नि आदि चारों महर्षियों के द्वारा चारों वेद ब्रह्मा को प्राप्त कराये और उस ब्रह्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा से ऋग् यजुः साम और अथर्ववेद का ग्रहण किया।

(प्रश्न) उन चारों ही में वेदों का प्रकाश किया अन्य में नहीं। इससे ईश्वर पक्षपाती होता है।

(उत्तर) वे ही चार सब जीवों से अधिक पवित्रात्मा थे। अन्य उनके सदृश नहीं थे। इसलिये पवित्र विद्या का प्रकाश उन्हीं में किया।

(प्रश्न) किसी देश भाषा में प्रकाश न करके संस्कृत में क्यों किया?

(उत्तर) जो किसी देश भाषा का प्रकाश करता तो ईश्वर पक्षपाती हो जाता। क्योंकि जिस देश की भाषा में प्रकाश करता उनको सुगमता और विदेशियों को कठिनता वेदों के पढ़ने पढ़ाने की होती। इसलिये संस्कृत ही में प्रकाश किया; जो किसी देश की भाषा नहीं और वेदभाषा अन्य सब भाषाओं का कारण है। उसी में वेदों का प्रकाश किया। जैसे ईश्वर की पृथिवी आदि सृष्टि सब देश और देशवालों के लिए एकसी और सब शिल्पविद्या के कारण है। वैसे परमेश्वर की विद्या की भाषा भी एकसी होनी चाहिए। (क्रमशः)

वेद प्रवचन

यशस्वी और गौरवयुक्त जीवन बिताओ!

❑पं.शिव कुमार शास्त्री,
भू.पू.संसद सदस्य

आयुषायुष्कृतां जीवायुष्माञ्जीव मा मृथाः।
प्राणेनात्मन्वतां जीव मा मृत्योरुदगा वशम्।।
(अथर्व. 19/27/8)

शब्दार्थ-

(**आयुःकृतां**) जीवन बनानेवालों के (**आयुषा**) जीवन के साथ (**जीव**) तू जीवित रह, (**आयुष्मान्**) उत्तम जीवन वाला होकर (**जीव**) तू जीवित रह। (**मा मृथाः**) तू मरे नहीं (**आत्मन्वताम्**) आत्मावालों के (**प्राणेन**) जीवन-सामर्थ्य से (**जीव**) तू जीवित रह (**मृत्योः**) मृत्यु के (**वशम्**) वश में (**मा उत अगाः**) मत जा।

व्याख्या-

शास्त्रीय दृष्टि से मानव-जीवन कर्म-योनि और भोग-येनि दोनों है। कुछ हमारे कर्मों का भोग शेष था, उन्हें भोगने के लिए तथा ज्ञानपूर्वक ऐसे नवीन कर्म करने के लिए, जो दुःखों से मुक्ति दिला दें, उसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह मानव-शरीर मिला है। शास्त्र में लिखित है-

'**भोगापवर्गार्थं दृश्यम्**'-'दृश्य, अर्थात् संसार में आने का उद्देश्य भोग तथा अपवर्ग दोनों हैं।'

संसार में सफलतापूर्वक जीवन के लिए बहुत बड़ी तैयारी व योग्यता की आवश्यकता है। किसी शायर ने इस बात को बहुत सुन्दरता से कहा है-

संसार की प्रतिकूलताओं को अपनी योग्यता, पुरुषार्थ और वीरता से अनुकूल बनाकर न केवल स्वयं के लिए, अपितु सम्पूर्ण समाज के लिए मार्ग प्रशस्त कर उसे सुखद बनाना ही जीवन है।

आज हमें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बहुविध सुख-सुविधाएँ उपलब्ध हैं। सृष्टि के प्रारम्भ के मनुष्य के पास सर्दी, गर्मी, वर्षा और अन्धड़ से बचने के लिए कुछ भी साधन नहीं था। हाँ, ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर क्रियात्मक क्षेत्र में उतरकर सब सुख-सुविधाओं से युक्त स्थापत्य कला का जिन्होंने आविष्कार और विकास किया, वास्तव में उन्हीं के जीवन को जीवन कहा जा सकता है। इसी प्रकार मानव-सभ्यता के सर्वांगीण विकास की चुनौती को सफलतापूर्वक जिन्होंने स्वीकार किया, उन्हीं का जीवन सार्थक माना जा सकता है।

मन्त्र में '**आयुष्कृताम् आयुषा जीव**'- 'जीवितों की तरह जी' विशेष सभिप्राय वाक्य है और इसमें भी '**आयुष्मान् जीव मा मृथाः**'-'हे जीवन से परिपूर्ण प्राणी! तू मरे नहीं' इस मन्त्र-भाग ने विशेष चमत्कार पैदा कर दिया है। यहां स्पष्ट है कि यथा-तथा समय-यापन, जीवन नहीं है, अपितु मृत्यु है। इसका अभिप्राय यह है कि जीवन के उच्चतम आदर्शों का पालन करते हुए मृत्यु का वरण करना भी जीवन है और उद्देश्यहीन, खा-पीकर लम्बे समय तक जीवित रह जाना मृत्यु है। किसी नीतिकार ने इस भाव को इन शब्दों में अभिव्यक्त किया है कि-'**काकोऽपि जीवति चिराय बलिञ्च भुङ्क्ते**'- कौआ भी देर तक जीवित रह जाता है और खाता-पीता रहता है। ऐसा जीना कोई जीना नहीं। फिर मन्त्र में '**आयुष्मान् जीव मा मृथाः**'-'हे चिरंजीवि जीव! तू मरे नहीं' और '**मा मृत्योरुदगा वशम्**'-'तू मृत्यु के चंगुल में मत फँस!' एक ही बात कुछ शब्दों में हेर-फेर से बल डालने के लिए दो बार कह दी गई है।

निश्चय ही यह जीवन और मृत्यु किसी शरीर के साथ जीव के मिलने वा बिछुड़ने की कहानी नहीं है। जो इस संसार में आया है, वह मरेगा अवश्य। '**जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।**' गीता की इसी बात को किसी शायर ने भी कहा है-

किन्तु किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए जो अपने आपको समर्पित करके अपने प्राणों तक को होम कर देते हैं, वे शरीर त्यागकर भी अमर हो जाते हैं।

संसार के इतिहास में लाखों और हजारों वर्षों के पश्चात् भी जिनके नाम और कामों से लोग प्रेरणा लेते हैं, निःसन्देह उनके भौतिक शरीर का ही विनाश हुआ है, उनका यशःशरीर अजर और अमर है। इसी का नाम जीवन है।

राम, सीता, लक्ष्मण और भरत लाखों वर्षों के बाद भी हमारी प्रेरणा के स्रोत हैं। कृष्ण, युधिष्ठिर, अर्जुन और भीम हज़ारों वर्ष बाद भी लगता है, कल तक हमारे मध्य में थे। ऐसे लोगों को ही कालजयी कहा जाता है।

किन्तु गरिमा के पात्र वही बन सके हैं, जो कर्तव्य-पालन के उच्च धरातल से प्राणों की चिन्ता किये बिना रंचमात्र भी पीछे नहीं हटे। इस स्थिति के लिए ही बहुत सुन्दर कहा है उर्दू शायर जिगर मुरादाबादी ने-

('श्रुति सौरभ' से साभार)

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-८४

यदि ज्योत्स्नारूपस्त्वमसि स चकोरोऽस्मि तृषितः
क्षरंती कालिन्दी त्वमसि तदहं मन्दलहरी।
ज्वलज्ज्वालाजालस्त्वमसि स पतंगोऽस्मि निपतन्
तवोत्संगाद्योगिन् ! न खलु परिहार्यः कथमपि।।

हे योगी !
तुम्हारी गोद से मुझे अलग कर पाना
किसी तरह भी संभव नहीं है !
यदि तुम ज्योत्स्ना हो,
तो मैं प्यासा चकोर हूँ !!
तुम बाढ़भरी यमुना हो
तो मैं उसकी हल्की सी लहर हूँ !!!
और यदि तुम धधकती ज्वालायें हो
तो मैं उनका दीवाना पतंगा हूँ।

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

सत्संग
जिज्ञासा और समाधान

जिज्ञासा :

(1) 'आर्य लोक वार्ता' अंक-3, वर्ष-18 में पृष्ठ सं.4, स्तम्भ 5 में डॉ.विनय कुमार मिश्र लिखते हैं कि 'अकबर कभी भी दिल्ली में नहीं रहा'- यह कहाँ तक इतिहास सम्मत है? कृपया इस जिज्ञासा का समाधान करें।

2) 'हल्दीघाटी' के रचयिता श्रीश्यामनारायण पाण्डेय अभी जीवित हैं अथवा नहीं? मृपया अवगत करायें।

-देवेन्द्र देव पाण्डेय, सिकन्दराबाद, आन्ध्र प्रदेश

समाधान :

(१) डॉ.विनय कुमार मिश्र का उपर्युक्त कथन इतिहास से प्रमाणित नहीं होता। यह कहना कि 'अकबर कभी भी दिल्ली में नहीं रहा'- संगत नहीं है। अकबर के राज्यारोहण (१५५६ई.) के समय तो फतेहपुर सीकरी का नाम चर्चा में नहीं था। सीकरी का नाम तब चर्चा में आया जब पुत्र प्राप्ति की कामना से अकबर शेख चिश्ती की दरगाह पर पहुँचा।

(२) कविवर श्रीश्यामनारायण पाण्डेय का महाराणा प्रताप के संदर्भ में (मई जून, २०१५ अंक में) यह कथन कि 'दिल्ली का सिंहासन भय से काँप उठा' पूर्णतः सही है। कार्य और शासन की दृष्टि से कोई भी शासक कहीं रह सकता है किन्तु इससे राज्य सिंहासन नहीं बदल जाता है। मुगल साम्राज्य का सिंहासन सदैव दिल्ली में रहा, ब्रिटिश शासन का भी सिंहासन दिल्ली में रहा और वर्तमान शासन का भी सिंहासन दिल्ली में ही है। दिल्ली के लालकिले की प्राचीर से ही आज भी राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री राष्ट्रीय पर्वों पर ध्वजारोहण करते हैं और राष्ट्र को सम्बोधित करते हैं। जिस दिल्ली के सिंहासन को लक्ष्य करके श्री रामधारीसिंह 'दिनकर' कहते हैं- 'सिंहासन खाली करो कि जनता आती है' उसी सिंहासन को लक्ष्य करके श्रीश्यामनारायण पाण्डेय ने 'हल्दीघाटी' काव्य में लिखा है- 'दिल्ली का सिंहासन भय से काँप उठा।'

(३) 'हल्दीघाटी' और 'जौहर' जैसे महाकाव्यों के प्रणेता श्रीश्यामनारायण पाण्डेय आज इस दुनिया में नहीं हैं- किन्तु समाज का यह कर्तव्य और दायित्व है कि वह अपने साहित्यकारों के सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी रखे। सन् १९८९ में उनका निधन हो गया किन्तु अपनी वीरवाणी द्वारा वे आज भी जीवित हैं- 'कीर्तियस्य स जीवति'। ज्यों ज्यों समय बीतता जायगा, उनका यश और महत्व बढ़ता ही जायगा। उनकी इस अमर गिरा को देशवासी कभी भुला नहीं पायेंगे-

मौन मौन गिरि कहते हिल मिल
गाथा वीर जवानों की।
एक एक पत्थर कहता है-
करुण कथा बलिदानों की।
तरु के पत्तों पर अंकित-
राणा की अमर कहानी है,
अब तक पथ से मिटी नहीं
चेतक की चरण निशानी है।।

अपने पत्र में वीरों की इन निशानियों की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट करने के लिए डॉ.विनय कुमार मिश्र निश्चय ही बधाई के पात्र हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

(१) अकबर द ग्रेट मुगल - वी.ए.स्मिथ
(२) द लेक एण्ड टाइम्स आफ हुमायूँ - ईश्वरी प्रसाद
(३) मध्यकालीन भारत - विद्याधर महाजन
(४) ए बिब्लियोग्राफी आफ मुगल पीरिएड - श्रीराम शर्मा

(पृष्ठ 1 का शेष.....)

कवि तो.....

आभा से मंडित किया। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत भारती' मे कवि की लेखनी को सम्बोधित करते हुए लिखा-

हा! लेखनी हृत्पत्र पर,
लिखनी तुझे है वह कथा।
दृग् कालिमा में डूबकर,
तैयार होकर सर्वथा।
स्वच्छंदता से कर तुझे,
करने पड़ें प्रस्ताव जो,
जग जाँय तेरी नोंक से,
सोये हुए हों भाव जो।

स्वाधीनता के भावों को जगाने वाले कवि के पास एक दिन शासन सत्ता स्वतः चलकर आई। मैथिली बाबू स्वतंत्र भारत में राज्यसभा के सदस्य मनोनीत हुए और जीवन के अंतिम दौर में भी वे अपने काव्यात्मक भाषण से स्वतंत्र भारत के हुक्मरानों को चेतावनी देते गये। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद के बाद जब सर्वपल्ली राधाकृष्णन राष्ट्रपति बने तो गुप्त जी के उद्गारों की दो पंक्तियां देखें-

करते रहे सदन सम्बोधन,
प्रथम राष्ट्रपति हिन्दी में।
वह न जाय वह परम्परा भी,
दिल्ली की कालिन्दी में।

क्रान्तिकारी कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जीवन हमारे सामने है। कहते हैं एक बार ओरछा नरेश की अध्यक्षता में आयोजित कवि सम्मेलन में महाराजश्री से आमंत्रित कवियों का परिचय संयोजक महोदय कराने लगे। सभी कवि खड़े होकर बारी बारी से महाराज श्री का अभिनन्दन कर रहे थे। जब निराला जी के निकट महाराजश्री पधारे तो निराला जी शान्तभाव से बैठे रहे। संकोच में पड़े हुए संयोजक ने बात बनाकर ओरछा नरेश जी को बताया, 'महाराज जी, यह कवि निराला हैं।'

निराला जी ने तत्काल उत्तर दिया, 'महराजजी, हम वह हैं, जिनकी पालकी में कभी आपके बाप-दादा कंधा लगा दिया करते थे।' (प्रसिद्ध है कि महाकवि भूषण के सम्मान में ओरछा नरेश के पूर्वज महाराज छत्रसाल ने उनकी पालकी में कंधा लगा दिया था)।

श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' इससे भी आगे बढ़कर कहते हैं-

मर्त्य मानव की विजय का तूर्य हूँ मैं,
उर्वशी! अपने समय का सूर्य हूँ मैं।

अभी कुछ दिन पहले १९७७ में हिन्दी संस्थान उ.प्र.ने प्रख्यात लेखक स्व.पं.किशोरी दास वाजपेयी को सम्मानित किया था। जब वाजपेयी जी स्वयं सम्मान ग्रहण करने मंच पर नहीं आये तो तत्कालीन प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने स्वयं उनके स्थान पर जाकर उन्हें मानपत्र समर्पित किया था। सत्ता का यह सौमनस्य है, दायित्व है, कर्तव्य है कि वह साहित्यकार के समक्ष नत मस्तक हो, उसे सम्मानित करे किन्तु यह तभी संभव है जब साहित्यकार अपनी गरिमा और लेखनी की महिमा को समझें।

कवि तो समस्त सत्ताओं का प्रेरक है, मार्गदर्शक है, निर्माता है। सत्ताएँ उसके चरणों में झुकती आई हैं। कवि का मस्तक सरस्वती के मंदिर में माँ के चरणों में झुकता है, किसी सत्ताधीश के चरणों में नहीं।

साहित्यकार के सूर्य समप्रभ आभा मण्डल की रक्षा का दायित्व सम्मान पुरस्कार से कहीं बढ़कर है।

-प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता

होता सदस्य परिचय-51

श्रीमती बलवीर कपूर

जिनका जीवन अपने आप में संदेश है, प्रस्तुत है उन्हीं के शब्दो में

मैं मूलतः सिख धर्म की अनुयायी हूँ। मेरा जन्म लखनऊ के एक प्रतिष्ठित सिख धर्म अनुयायी परिवार में हुआ। मेरी प्राथमिक शिक्षा बालिका विद्यालय, मोती नगर में हुई, जहाँ मेरा परिचय गायत्री मंत्र और शांतिपाठ मंत्र से हुआ। इसी स्कूल से मुझे आर्य समाज एवं ऋषि दयानन्द सरस्वती के बारे में जानकारी मिली। किशोरावस्था के उन चंद वर्षों में ही आर्य समाज के संस्कारों ने मेरे मन में जन्म ले लिया था, जिनका समय के साथ परिपाक होता गया।

कालान्तर में मेरा विवाह (1974) हो गया और ससुराल पहुँचने पर मुझे पता चला कि मेरे ससुर, जेठ व पति (श्री अश्विनी देव कपूर) आर्य समाजी हैं और हिन्दी भाषा के कट्टर समर्थक हैं। यदि किसी के यहाँ किसी भी उत्सव का निमंत्रण अंग्रेजी भाषा में होता था या विवाह पद्धति वैदिक रीति से नहीं होती थी; तो वह उसमें शामिल नहीं होते थे। हमारे घर पर अक्सर श्री हरवंशलाल मेहता जी आते थे और यज्ञ हवन किया करते थे।

आर्य समाज के दस नियम मुझे विशेष रूप से पसन्द हैं। इनमें ईश्वर के स्वरूप का उत्कृष्ट रूप में वर्णन किया गया है (नियम सं. 2)। ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव का पूर्ण परिचय दिया गया है। मनुष्य का परमधर्म क्या है (नियम सं. 3) समाज में उसका उचित व्यवहार क्या होना चाहिए (नियम सं. 7) एकदम सटीक शब्दों में निरूपित किया गया है। मनुष्य का आचरण सदैव सत्य पर आधारित होना चाहिए (नियम सं. 4)। इन दस नियमों के भाव को कोई मनुष्य यदि अपने जीवन में उतार ले और सत्यता पूर्वक इन नियमों के अनुरूप अपने गुण कर्म और स्वभाव को बना ले तथा तदनुकूल आचरण करने लगे तो उसे जीवन जीने के लिए अन्यत्र भटकना नहीं पड़ेगा।

इस प्रसंग में मैं आर्य समाजियों से एक नम्र निवेदन करना चाहूँगी यदि वे अपने उत्सवों अथवा समाज के अन्य कार्यक्रमों में अपने विचार वैज्ञानिक और प्रामाणिक आधार पर रखा करें और अन्य सम्प्रदायों की पूजा अर्चना और विश्वासों की आलोचना में कठोर एवं कटुतापूर्ण शब्दावली का इस्तेमाल न किया करें एवं उनके विचारों का मजाक न उड़ाया करें तो इससे वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में विशेष सहायता मिलेगी। स्वतः महर्षि ने इस बात का समर्थन करते हुए 'सत्यार्थ प्रकाश' में एक स्थान पर लिखा है- 'सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्, न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्'। जहाँ तक मैं समझती हूँ यज्ञ-हवन में बार बार 'स्वाहा' शब्द का उच्चारण भी इसी संदेश को व्यक्त करता है।

सेवाभाव, पड़ोसियों से प्यार और सहयोग, धार्मिक स्थलों का सुन्दर रख रखाव, अपनी धर्म पुस्तकों का समादर, उनकी सार-संभाल, इत्यादि बातों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है; जिससे आर्य समाजियों का व्यवहार एक आदर्श और अनुकरणीय बन सके। इतना ही नहीं; सभी से मित्रवत् व्यवहार, अनुकूल और प्रतिकूल दोनों ही अवस्थाओं में सामंजस्य बनाते हुए, एक दूसरे का बेहतर साथी होने की भावना जीवन में धारण करनी चाहिए। जैसा कि वेदमंत्र में कहता है-

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। *(यजु.36/18)*

हम उन लोगों से भी बहुत कुछ सीख सकते हैं; जो बचपन से ही घर में, स्कूल में बच्चों को अपने धर्मग्रन्थों का ज्ञान देने लगते हैं। उनके धर्म ग्रन्थ उनकी मातृभाषा में ही उपलब्ध रहते हैं। अधिकांश घरों में इन धर्म ग्रन्थों का अध्ययन बचपन से ही बच्चों को कराया जाता है। आर्य समाजी परिवारों को भी इससे प्रेरणा लेते हुए अपने बच्चों को संस्कारित करना चाहिए। उन्हें ईश्वर प्रार्थना के मंत्र (ओं विश्वानि देव आदि), गायत्री मंत्र तथा सत्यार्थ प्रकाश अनिवार्य रूप में थोड़ा थोड़ करके बच्चों को अभ्यास कराते रहना चाहिए।

आर्य समाज के अनुयायी गण यदि दूसरों की अच्छाइयों की प्रशंसा करना और श्रेष्ठ बातों को ग्रहण करना सीख लें तो आर्य समाज का विस्तार अति सुगम हो सकता है। विचारणीय यह भी है कि अन्य सम्प्रदाय वैज्ञानिक और प्रामाणिक न होने पर भी यदि दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करते जा रहे हैं, उनके अनुयायी अपने धर्म स्थलों और प्रचारकों को धन का अभाव कभी भी नहीं होने देते। क्या आर्य समाज के सदस्यगण उन्नति की ओर ले जाने वाली इन बातों का अनुसरण क्यों नहीं कर सकते? हमें अपनी आय का 10 प्रतिशत अवश्य आर्य समाज के उत्थान में लगाना चाहिए।

हम श्रेष्ठ हैं, हम श्रेष्ठ हैं,- इस सोच के कारण हमलोग अधिकांश समाज से दूर होते जा रहे हैं, अलग थलग पड़ते जा रहे हैं। आर्य समाज का तृतीय नियम कहता है- वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सभी आर्यों का परम धर्म है। विचारणीय यह है कि आर्य समाज के कितने सदस्य इस परम धर्म का आज पालन कर रहे हैं? यदि इस नियम के पालन करने में कहीं कोई कमी है तो अविलम्ब योजनाबद्ध ढंग से उसे दूर कर देना चाहिए।

सिख धर्म के अनुयायियों की परम्पराओं, विश्वासों, आस्थाओं, रीतिरिवाजों या उपासना पद्धतियों के बारे में आर्य समाज के विद्वानों से मैंने कभी कुछ नही सुना। उनके तौर तरीके, ग्रंथ साहिब की वाणियाँ वेदानुकूल हैं या प्रतिकूल- इस बारे में मैं पाठकों के विचार जानना चाहूँगी। कदाचित् उनके उग्र स्वभाव के कारण आर्य समाज इस विषय में खामोश है। मेरा यह मानना है कि अच्छा ग्रहण करो और जो बुरा है उसे त्याग दो- 'दुरितानि परसुव यद् भद्रं तन्न आसुव'। सभी धर्मों, सम्प्रदायों, समाज के विभिन्न वर्गों की सभ्यता, संस्कृति में कुछ अच्छा है और कुछ ग्रहणीय नहीं है। अर्थात् वेदानुकूल नहीं है। आम जनता का बड़ा भाग वेदों के ज्ञान से वंचित है। विद्या क्या है? अविद्या क्या है? यह भी उन्हें नहीं मालूम है। आर्य समाज का यह दायित्व है कि वह आम जनता को विद्या-अविद्या के अन्तर को स्पष्ट करे क्योंकि आर्य समाज का आठवाँ नियम कहता है- अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहि। मेरा विश्वास है कि ज्यों ज्यों अविद्या का नाश होगा और विद्या की वृद्धि होगी- समाज की दशा सुधरती जायगी और हम अपनी मंजिल तक पहुँचने में सफल होंगे।

(195, समर विहार कालोनी, आलमबाग, लखनऊ)

शुभाकांक्षा

आर्य लोक वार्ता, अगस्त २०१५ अंक

प्राप्त हुआ। प्रथम पृष्ठ पर ही भारत में वायुयान पहिले बना था, इस सूचना का प्रकाशन वह भी वैदिक फार्मूला के सिद्धान्त पर है गौरव की बात है। स्वामी जी द्वारा ऋग्वेद के सूक्त का वर्णन कर इस तथ्य को प्रमाणीकरण भी लेखक ने कर दिया है और शिवकर बापू तलपटे जी का चित्र भी उपलब्ध कराया है, पं.शिवनारायण उपाध्याय को अनेक धन्यवाद। आशा है आर्य लोक वार्ता इस प्रकार की सामग्री समय समय पर प्रकाशित करता रहेगा। शुभकामनाओं सहित।

-डॉ.विनय कुमार मिश्र

पूर्व संयुक्त निदेशक, राजस्थान सरकार, ४३, श्याम कालोनी, वैशाली नगर, अजमेर-३०५००१

***

जुलाई अंक प्राप्त हुआ। आपका लेख

पढ़कर काफी अच्छा लगा, माननीय प्रधान मंत्री जी वास्तव में विश्व मानवता के लिए ईश्वरीय देन हैं। पिछले एक दशक से हमारे देश की अन्तर्राष्ट्रीय छवि काफी धूमिल हो चुकी थी, पिछले भ्रष्ट शासकों ने देश को उन्नति के बजाय अवनति की ओर ले जाकर एक ऐसे चौराहे पर खड़ा कर दिया था जहाँ से विकास का मार्ग अवरुद्ध हो गया था। परन्तु १६ मई २०१४ का दिन विश्व इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ गया। इसी दिन से हमारी अन्तर्राष्ट्रीस छवि सुधरी ही नहीं, बल्कि भारत पुनः विश्वगुरु की पदवी को प्राप्त करने हेतु अपने शिखर की ओर गतिमान हो चुका है। माननीय मोदी जी के द्वारा डेढ़ वर्ष के कार्यकाल में किए प्रयास इसका उदाहरण हैं। जिस अमेरिका ने उनका वीजा रद्द कर दिया आज वही उनको सिर आँखों पर विठाये है। चीन, जापान, साउदी अरब, इंग्लैण्ड, ऑस्ट्रेलिया, लंका, बर्मा, नेपाल और अभी आयरलैण्ड तथा अमेरिका की पुनः यात्रा यही दर्शाती है कि हमारा खोया हुआ स्वाभिमान मोदी जी के साहसी पराक्रम द्वारा पुनः स्थापित हुआ।

-श्रीराम आर्य

गोंडवा खेम, पो.-पीपरगाँव नेवादा, जि.-हरदोई

***

'आर्य लोक वार्ता' का प्रत्येक अंक

ध्यानपूर्वक पढ़ती हूँ तथा गुरुकुल की छात्राएँ भी इससे लाभान्वित होती हैं। सम्प्रति 'आर्य लोक वार्ता' में प्रकाशित होने वाले धारावाहिक 'अनन्त की खोज' तो अत्यन्त उपयोगी और रोचक है। यदि इसे पुस्तक के रूप में प्रकाशित कर दिया जाय, तो यह और भी अधिक उपयोगी सिद्ध होगा। इसी तरह 'मनुष्य का विराट रूप' भी एक अनमोल कृति है। अन्यान्य स्तंभों की जितनी सराहना की जाय कम है; विशेषकर 'दयानन्द चरितम्', 'विनय-पीयूष' और सम्पादकीय अग्रलेख तो इस तरह की सामग्री प्रस्तुत कर रहे हैं, जैसी अन्यत्र दुर्लभ है। मैं 'आर्य लोक वार्ता' प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

-प्रियंवदा वेदभारती

प्राचार्या, कन्या गुरुकुल, नजीबाबाद, बिजनौर

***

'आर्य लोक वार्ता' का सितम्बर

२०१५ अंक प्राप्त हुआ। इस अनूठे मासिक पत्र के मुख पृष्ठ के आलेख तथा आपके सम्पादकीय सदैव श्रेष्ठ, खोजपूर्ण एवं ज्ञानवर्द्धक ही नहीं, अपितु लाजवाब भी हुआ करते हैं। इस बार भी मुखपृष्ठ पर 'योगेश्वर कृष्ण' से उद्धृत पं.चमूपति शास्त्री जी का लेख, जो अभिमन्यु की वीरगति एवं जयद्रथ वध पर केन्द्रित है, कमाल का है। यह लेख इतना रोमांचक एवं रोचक है कि इसे एक बार पढ़ना आरंभ किया तो बस पढ़ता ही चला गया। आपका सम्पादकीय 'खुल रहे हैं नये गवाक्ष' भी खोजपूर्ण है जिसमें योग के विषय में महत्त्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराई गई है। 'वेद प्रवचन' के अन्तर्गत डॉ.सुरेन्द्र कुमार शर्मा जी की व्याख्या 'मुझे रोने दो भाई!' बड़ी रोचक एवं अनुपम है। 'जिज्ञासा और समाधान' के अन्तर्गत जिज्ञासाओं का समाधान बाँचकर ज्ञानवर्द्धन होता है। 'मनुष्य का विराट रूप' तथा 'अनन्त की खोज' पूर्ववत् सारगर्भित एवं ज्ञानवर्द्धक हैं। काव्य रचनाएँ गुनगुनाने योग्य हैं। अन्य सभी सामग्री भी पठनीय है।

-डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर

जी-०२, लोरपुर रेजीडेंसी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' मेरे लिए स्वाध्याय

की एक धरोहर के रूप में है। जो स्तंभ सबसे अधिक मुझे आकर्षित करता है, वह है 'विनय-पीयूष'। श्री अमृत खरे द्वारा रचित काव्यानुवाद में जो गीतात्मकता है; वह दिल को छू जाती है। मैं इन गीतों को स्वयं पढ़ता हूँ साथ ही अन्यान्य लोगों को भी पढ़ने के लिए प्रेरित करता हूँ। ये गीत नित्यप्रति गाने चाहिए तथा इनका संकलन पुस्तक के रूप में प्रकाशित होना चाहिए। श्री अमृत खरे का अभिनन्दन करने की मेरी हार्दिक अभिलाषा है। आपसे मेरा यह नम्र निवेदन है कि मुझे 'आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह' में थोड़ा समय प्रदान करें ताकि मैं स्वयं अमृत खरे का अभिनन्दन कर सकूँ। इससे मुझे आत्मिक सन्तोष का अनुभव होगा। *-आलोक चौधरी एडवोकेट*

रामाधीनसिंह रोड, हसनगंजपार, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता का सितम्बर अंक

समय से मिल गया। मुखपृष्ठ पर जयद्रथ वध की गाथा का सजीव प्रस्तुतीकरण अच्छा लगा। अन्यायी का अन्त तो बलपूर्वक होना ही चाहिए। यह आज के विश्वव्यापी आतंकवाद का भी समाधान है। पौराणिक काल के असुर जैसे ही हैं आज के आतंकवादी। ऐसे हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना कहाँ तक उचित है। 'खुल रहे हैं गवाक्ष' सम्पादकीय अत्यंत सार्थक है। इससे लगता है कि आर्य समाज ही देश और विश्व का कल्याण कर सकता है। अपरोक्ष रूप से ही सही नरेन्द्र मोदी और बाबा रामदेव ने इस सत्य को स्वीकार करके उस पर अनुगमन भी कर रहे हैं। सितम्बर मास में हिन्दी दिवस के अवसर पर काव्यायन में गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र' तथा रामा आर्य 'रमा' की कविताएँ पसन्द आयीं। अन्य कवियों में अबोध, राजाभ, कृष्णा बजाज की भी रचनाएँ प्रशंसनीय हैं। नियमित स्तम्भों में प्रकाशित आलेखों में ज्ञानवर्द्धक जानकारी मिल रही है जिसके कारण प्रत्येक अंक मननीय तथा संग्रहणीय है। 'आर्य लोक वार्ता' के अठारहवें वर्ष में पावन प्रवेश पर शुभकामनाएँ स्वीकार करें।

'आर्य लोक वार्ता' ज्ञान बाँटता रहे।
रूढ़ियों कुरीतियों के पर काटता रहे।
आप दीर्घ जीवी हों, सेवा में रत रहें।
'वाणी' स्वर मदमोह धुंध छाँटता रहे।।

-सविता वाणी

गौरीगंज चौक, अमेठी जनपद(उ.प्र.)

***

आर्य लोक वार्ता का प्रत्येक अंक

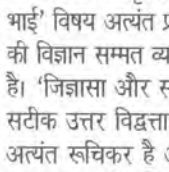

नव्य ऊर्जा प्रदान करते हुए सन्मार्ग प्रशस्त कर रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के ज्ञान-आलोक की सार्थकता और प्रासंगिकता आज स्वयं सिद्ध है, आपके सम्पादकीय विवेचन से यह सत्य प्रमाणित हुआ है। आधुनिक योग गुरू बाबा रामदेव के सद्प्रयास तथा आचार्य देवव्रत जी का हिमाचल का राज्यपाल नियुक्त किया जाना आश्चर्य ही नहीं अपितु सांस्कृतिक युग-क्रान्ति का आह्वान है। आचार्य देवव्रत का संक्षिप्त जीवन परिचय अत्यंत प्रेरणास्पद लगा। देश को ऐसे ही महान राजनायकों की आवश्यकता है। इस बार 'वेद प्रवचन' शृंखला में 'मुझे रोने दो भाई' विषय अत्यंत प्रभावपूर्ण लगा। आँसू की विज्ञान सम्मत व्याख्या अभिभूत करती है। 'जिज्ञासा और समाधान' में प्रश्नों के सटीक उत्तर विद्वत्तापूर्ण लगे, यह स्तम्भ अत्यंत रूचिकर है और ज्ञानवर्द्धक भी। 'वाचनालय से' में 'शिव है योगी' का दार्शनिक पक्ष प्रस्तुत किया गया है जो सर्वथा समीचीन है किन्तु लोकमानस इसे सहज स्वीकार नहीं करता क्योंकि हिन्दू धर्म ग्रन्थों में शिव, गणेश, दुर्गा, हनुमान आदि देवताओं के जिन स्वरूपों का सगुणात्मक वर्णन प्रचलित है, उससे इतर सोचना दुष्कर है। 'काव्यायन' में दयानन्द जड़िया 'अबोध' की कविता 'प्रथम पढ़ाई बाद विदाई' सन्देशपरक है। आभा मिश्रा, रमा आर्य, राजाभ तथा कृष्णा बजाज की रचनाएँ भावपूर्ण लगीं। सुखद है कि पत्र आर्य-चेतना जागृत करने में प्राण-प्रण से सन्नद्ध है।

'आर्य लोक वार्ता' प्रसारित करता है सद्वाणी।
'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' चेतना शाश्वत जनकल्याणी।
ऋषि-कृषि का सम्मान-मान हो, वेद ऋचाएँ गूँजें।
शक्ति, बुद्धि, विज्ञान, ज्ञान से अनुप्राणित हो प्राणी।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

११७, आदिलनगर, लखनऊ -२२६०२२

***

जुलाई २०१५ का आर्य लोक वार्ता अंक पढ़ा। प्रथम पृष्ठ पर 'नरेन्द्र मोदी विश्व मानवता के लिए ईश्वरीय देन हैं' शीर्षक आलेख ने सबसे अधिक आकर्षित किया। आपने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विशाल और चुम्बकीय व्यक्तित्व की जो समीक्षा की है वह सत्य और सराहनीय है। उन्हीं के बदौलत आज सारे विश्व में भारतीय मनीषा का केन्द्र बिन्दु योग की पताका आकाश में लहरा रही है। पत्रिका का सम्पादकीय गहन चिन्तन का द्योतक है। 'जिज्ञासा और समाधान' द्वारा अनेक

शंकाओं का निराकरण हो जाता है। धारावाहिक एवं व्याख्यानमाला दोनों लेख अद्वितीय हैं। 'काव्यायन' के रचनाकार पाठक के मानस पटल पर अपनी अटल छाप छोड़ देते हैं। मेरा एक सुझाव है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन सम्बन्धी कुछ घटनाओं का भी वर्णन क्रमशः होना चाहिए। हार्दिक धन्यवाद।

-कपिलदेव राय

पूर्व प्रवक्ता, वेस्ली इंटर कालेज, आजमगढ़

***

आर्य लोक वार्ता सितम्बर २०१५

अंक प्राप्त हुआ। इस अंक में वेदों का ज्ञान-दान करने वाले लेख और कवितायें जैसे-'मुझे रोने दो भाई'- डा. सुरेन्द्र कुमार शर्मा, 'सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१६०', 'अनन्त की खोज', के साथ 'दयानन्द चरितम्' (आचार्य दीपांकर मेरठ) व 'विनय पीयूष' अमृत खरे कवितायें अच्छी हैं। काव्यायन के अन्तर्गत श्रीमती रमा आर्य की राष्ट्र भाषा हिन्दी शीर्षक कुण्डलियाँ, गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र' के 'रही पुकार हिन्दी है' (कवित्त) व श्रीमती आभा मिश्र का गीत 'जयति जयति हे' एवं डॉ.नासिर की गजल भावपूर्ण है। सम्पादकीय भी विचारणीय है। कुल मिलाकर अंक अच्छा ज्ञानवर्द्धक है।

-दयानन्द जड़िया 'अबोध'

३७०/२७, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ

***

सितम्बर अंक की प्रति प्राप्त हुई।

'शुभकामना' स्तम्भ में श्री दयानन्द जड़िया 'अबोध' ने लिखा है कि ४४ वर्ष पूर्व जब वे बाराबंकी में सेवारत थे, उन्हें श्री प्रियपाल की काव्यकृति 'अन्तर्ध्वनि' प्राप्त हुई थी- यह पढ़कर मुझे श्री जड़िया जी से मिलने की उत्सुकता है। इसी पृष्ठ पर डॉ.विनय कुमार मिश्र जी ने आगरा में अकबर के मकबरे तथा महाराणा प्रताप का भाले से वार करना, लाला किले का दरवाजा आदि जानकारी दी है जो मुझे पूर्व नहीं थी। सम्पादकीय 'खुल रहे हैं नए गवाक्ष' में योग ही आर्य समाज का साधन है और साध्य भी, और आगे भी लिखा है- कुछ छद्मवेशी पक्षीगण आर्य समाज रूपी वृक्ष की सबसे ऊँची फुनगी पर बैठकर उसके फल फूल चट कर रहे हैं और कुतरने में लगे हैं- बहुत महत्वपूर्ण है।

प्रख्यात समाजसेवी श्री अर्जुनदेव चड्ढा के कार्यकलापों, उनकी उत्कृष्ट सेवाओं और उनको सम्मानित करने के समाचारों से प्रसन्नता होती है। पाठकों को भी प्रेरणा लेनी चाहिए। प्रधान सम्पादक जी को मैं धन्यवाद देता हूँ और आर्य लोक वार्ता के विकास की कामना करता हूँ।

-पाल प्रवीण

एम.एस.१२०, सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता सितम्बर अंक प्राप्त हुआ और सभी विद्वानों के विचारों से अवगत हुई। प्रथम पृष्ठ पर अभिमन्यु

की वीरगति जैसी हुई उसे पाने के लिये प्रत्येक वीर लालायित रहता है लेकिन अभिमन्यु ने प्रभु की असीम कृपा से यह अपनी माता के गर्भकाल में यह विद्या पाई। पं.चमूपति शास्त्री ने अपनी लेखनी से जयद्रथ वध की रोमांचक गाथा बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंग से व्यक्त की है। काफी प्रभावशाली है। वेद प्रवचन डॉ.सुरेन्द्र कुमार शर्मा का बहुत ही मनोहारी है और शिक्षा प्रद है। इस मंत्र को तो अवश्य कंठस्थ कर लेना चाहिए। आपका सम्पादकीय बहुत प्रभावशाली और खोजपूर्ण तथ्यों से परिपूर्ण होता है। इसके लिए आपको बहुत बहुत साधुवाद। 'मनुष्य का विराट रूप' तथा 'अनन्त की खोज' ज्ञानवर्द्धक और उपयोगी लेख हैं। 'काव्यायन' में सभी कवितायें अपना प्रमुख स्थान रखती हैं। फिर भी रमा आर्या की कविता 'राष्ट्र भाषा हिन्दी' हमें गर्व से परिपूर्ण कर देती है। गौरीशंकर 'विनम्र' की कविता 'रही पुकार हिन्दी है' अच्छी लगी। *-प्रमोद कुमारी*

एम.एस.३७, सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता के गतांक में आर्य

समाज डालीगंज लखनऊ के शताब्दी समारोह का समाचार पढ़कर मुझे बेहद खुशी हुई। स्व. स्वामी अनुभवानंद जी 'शान्त'- जिन्होंने आर्य समाज डालीगंज के तत्वावधान मे आयोजित अर्द्धशताब्दी पूर्व एक प्रसिद्ध शास्त्रार्थ में भाग लिया था; मेरी कुटिया को पवित्र कर चुके हैं। आर्य समाज डालीगंज का नाम आते ही बरबस मुझे भाई श्री देवीप्रसाद आर्य की याद आ जाती है। वे कर्मठ आर्य वीर दल उ.प्र.के सेनानायक थे।

मुझे यह जानकर अपार हर्ष हो रहा है कि आर्य लोक वार्ता हिन्दी मासिक अपने जीवन के सत्रह वसन्त पूरे कर चुका है और अब १८वें बसंत की ओर अग्रसर हो रहा है। अपने इस कार्यकाल में आर्य लोक वार्ता ने वैदिक संस्कृति में एक महत्वपूर्ण और यादगार भूमिका का निर्वाह किया है। परमपिता परमेश्वर से मेरी प्रार्थना है कि वह वेद प्रचार के इस माध्यम को निरन्तर गतिशील बनाये और शक्ति प्रदान करे। यदि संभव हो तो आर्य समाज डालीगंज के शताब्दी समारोह पर प्रकाशित स्मारिका मेरे पास कोरियर द्वारा अथवा श्री विनम्र जी द्वारा भेजने की व्यवस्था करें।

-वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी'

१५०, नई बस्ती, सीतापुर

***

समय होत बलवान। शिरडी के साईं

आज भक्तों की श्रद्धा के फलस्वरूप अवतारी व्यक्ति हो चुके हैं, जबकि शंकाराचार्य विवाद में जिन्दा हैं। सुप्रीम कोर्ट ने बाबा के प्रति आस्था का मामला बताते हुए हाथ खड़े कर लिए हैं। गर ऐसा ही सही है तो श्रीराम जन्मभूमि भी आस्था से ही है। पर अभी उसके दिन नहीं आये। खैर इतना तो निश्चित ही है कि जैसे भी हो, फैसला रामभक्तों के पक्ष में ही होना चाहिए। *-बाँके विहारी 'हर्ष'*

अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

***

धारावाहिक-(57)

मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

अपने भीतर रहने वाले ईश्वर के प्रति श्रद्धा होने से मनुष्य को अपनी दिव्यता और अमरता की अनुभूति होती है। उस समय उसे नाश का भय कैसे हो सकता है? मनुष्य को अपने उस अविनाशी पुरुष का ध्यान आता है जो न कभी बूढ़ा होता है और न मरता है। वह अपने चारों ओर अनन्त आध्यात्मिक शक्तियों को अपने अनुकूल कार्य करते देखता है। आध्यात्मिक भावना की प्रबलता से भौतिक विकार अपने आप नष्ट हो जाते हैं।

भय की चिकित्सा श्रद्धा-विश्वास के द्वारा उत्तम रीति से होती है। प्राचीन काल में मृत्यु-भीत रोगाक्रान्त व्यक्तियों का मानसोपचार श्रद्धा-विश्वास के मन्त्रों से होता था। उन्हें यह स्मरण दिलाया जाता था कि 'तुम मित्रों तथा अमित्रों से भी निर्भय हो; जाने और न जाने हुए पुरुषों और स्थानों से भी, दिन और रात्रि से भी निर्भय हो; सब दिशाएँ तुम्हारी मित्र हो रही हैं; परमात्मा सब प्रकार से तुम्हारा रक्षक और सहायक है।'-

'अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं पुरो यः। अभयं नक्तभयं दिवा नः सर्वाः आशा मम मित्रं भवन्तु।।' (अथर्ववेद)

सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ.वासुदेवशरण ने 'कल्याण' के 'हिन्दू-संस्कृति अंक' में अथर्ववेद के कुछ सुन्दर सूक्त प्रकाशित किए हैं। इन्हें हम सर्वसाधारण के लिए आत्म-प्रबोधन का मन्त्र कहते हैं। भय का निराकरण इस प्रकार की भावनाओं से ही होता है।-

यथा द्यौश्च पृथिवी च न बिभीतो न रिष्यतः। एवा मे प्राण मा बिभेः एवा मे प्राण मा रिषः।।
यथा वायुश्चान्तरिक्षं च न बिभीतो न रिष्यतः। एवा मे प्राण मा बिभेः एवा मे प्राण मा रिषः।।
यथा सूर्यश्च चन्द्रश्च न बिभीतो न रिष्यतः। एवा मे प्राण मा बिभेः एवा मे प्राण मा रिषः।।
यथाहश्च रात्री च न बिभीतो न रिष्यतः। एवा मे प्राण मा बिभेः एवा मे प्राण मा रिषः।।

(जिस प्रकार द्यौ और पृथिवी न डरते हैं और न क्षीण होते हैं, हे मेरे प्राण! उसी प्रकार तुम मत डरो, मत क्षीण हो। जिस प्रकार वायु और आकाश न डरते हैं और न क्षीण होते हैं, हे मेरे.....। जिस प्रकार सूर्य और चन्द न डरते हैं और न क्षीण होते हैं, हे मेरे....। जिस प्रकार दिन और रात्रि न डरते हैं और न क्षीण होते हैं, हे मेरे प्राण.....।)

इस प्रकार की आध्यात्मिक भावना से ही हृदय वस्तुतः सशक्त और शान्त बनता है। मनुष्य को यह स्मरण रखना चाहिए कि जीवन का उद्देश्य जीवन स्वयं है। प्राकृतिक शक्तियाँ प्रत्येक क्षण जीवन-रक्षा में तत्पर हैं। उन पर और स्वयं अपनी प्राण-शक्ति पर भरोसा रखना चाहिए।

एक विलायती विचारक ने कहा है कि मनुष्य जितना ही अधिक आत्मनिष्ठ होता है, उतना ही अधिक वह आत्म- नियंत्रण में तथा भय जैसी दुर्भावनाओं के दमन में समर्थ होता है। हृदय की दृढ़ता और विशालता के कारण वह घोर संकट में पड़ने पर भी मिट्टी के ढेलों की भाँति चूर नहीं हो जाता। दुर्बल हृदय और हृदयहीन व्यक्ति तो बिना मारे ही मर जाता है अथवा अपने हाथों अपनी हानि कर लेता है क्योंकि वह पहले से ही अचेत और अस्तव्यस्त होता है।

उसी विचारक ने भय को जीतने का एक अनुभूत प्रयोग बताया है, उससे भी श्रद्धा-विश्वास का महत्त्व सिद्ध होता है। उसका कथन है कि किसी भी विपत्ति में श्रद्धा-विश्वास का परित्याग मत करो। स्तब्ध या विक्षुब्ध न होकर स्वस्थ और शान्त रहो। इसका ध्यान रखो कि तुम्हारी जड़ न हिले, तुम्हारी आत्मा का प्रभाव न क्षीण हो, तुम्हारा आत्मतेज न मन्द हो। संकट में आत्म-रक्षार्थ तुम्हारी आत्म निष्ठा और भी प्रबल होनी चाहिए। ऐसा होने से तुम्हारी बुद्धि भी ठिकाने रहेगी और उसी आपत्ति में से आपदोद्धार का कोई-न-कोई रास्ता निकल आएगा। किसी भी परिस्थिति में अपनी आत्मा को पतित, विचलित या चकनाचूर न होने दो। यदि कोई तुम्हारी हत्या करने के लिए भी आता है तो हताश होकर तत्काल आत्मसमर्पण मत करो। उसके अहित की कोई अशुभ कामना मत करो। आत्मस्थित होकर उसे अपराध से बचाओ, उसे सीधे रास्ते पर लाओ। इस बात को याद रखो कि प्रत्येक व्यक्ति में, चाहे वह कितना ही क्रूर और नीच क्यो न हो, मनुष्यता का कुछ न कुछ अंश होता है। सब एक ही चेतना-सूत्र से बंधे हैं। बाहर से भिन्न होते हुए भी सब हृदय से अभिन्न हैं। अतएव किसी को अपनी पहुँच से बाहर मत समझो। यदि कोई व्यक्ति अपनी मनुष्यता को भूलकर हृदयहीन होकर, तुम्हारा अपकार करना चाहता है तो उसकी मनुष्यता को जगाओ, उसके हृदय की सद्भावनाओं को आन्दोलित करो- उस पतित का उद्धार करो, जो अपने को भूलकर कुमार्ग में पैर रखने जा रहा है उसे उसकी याद दिलाओ, सावधान करो। तुम्हारे प्रभाव से उसकी मनुष्यता जाग जाएगी तो वह पशुवत् आचरण कदापि न करेगा। तुम सहृदयतापूर्वक उससे आत्मीयता उत्पन्न करने की चेष्टा करो। उसके हृदय को जीत लो तो उसका हाथ तुम्हारे ऊपर कदापि न उठेगा। यह तभी हो सकता है, जब तुम्हारा हृदय स्वयं पवित्र, शान्त और प्रकाशमान हो। तुम्हारे दैवी प्रकाश से दुष्ट-हृदय की भी मलिनता दूर हो जाएगी। उसके विचारों में क्षणमात्र में परिवर्तन हो सकता है। इसके अनेक प्रमाण हैं। महान् आत्माओं के आगे सिंह भी बकरी-जैसे बन जाते हैं, महादुष्ट भी दुष्टता भूल जाते हैं, शत्रु भी मित्र हो जाते हैं। श्रद्धा-विश्वास के साथ शुभ प्रयत्न करो। शुभ प्रयत्न का परिणाम भी शुभ ही होगा। हिम्मत न हारो।

तात्पर्य यह है कि आशंका उत्पन्न होने पर मनुष्य को अधिकाधिक निर्भय और सावधान रहना चाहिए। नर के भीतर रहने वाले नारायण के प्रति श्रद्धा विश्वास का भाव रखकर वह सब प्रकार के सांसारिक भय-संकटों पर विजय प्राप्त कर सकता है।

(घ) ज्ञान : -ज्ञान भय की महौषधि हैं कौटिल्य के मत से-'संसारभयं ज्ञानवताम्' ज्ञानी को संसार-भय नहीं होता। भय का अन्धकार विज्ञान-दीपक से नष्ट होता है- 'विज्ञानदीपेन संसारभयं निवर्तते' -कौटिल्य। मुनिवर व्यास का कथन है कि जो बुद्धि के प्रासाद पर चढ़ जाते हैं, वे महाभय से मुक्त हो जाते हैं- 'प्रज्ञा प्रासादमारुह्य मुच्यन्ते महतो भयात्' -वनपर्व। जगद्गुरु शंकाराचार्य का मत है-'विशोक आनन्दमयो विपश्चित् स्वयं कुतश्चिन्न बिभेति कश्चित्'- अर्थात् शोकरहित आनन्दमय विद्वान् स्वयं किसे से भयभीत नहीं होता।

(मनुष्य का विराट् रूप से साभार क्रमशः)

व्याख्यान माला (14)

अनन्त की खोज

-महात्मा आनन्द गिरि-

अतः उपस्थित मित्रों, केवल कुछ अच्छे शब्दों को तोते की तरह रटने से क्रिया सिद्धि नहीं होगी इसके लिए तुम्हें कर्म यज्ञ में प्रवृत्त होना पड़ेगा। कर्म का औचित्य यही है कि वह ज्ञान प्राप्त कराने वाला हो। अस्तु, अन्तःकरण को जो ज्ञान प्राप्ति का उपकरण है काम में लेना सीखो। इसलिये अप्रतिबद्ध होकर दर्शन, श्रवण और मनन करने का अभ्यास डालो। मलविक्षेप आवरण से रहित चित्त भूमि पर ज्ञान अंकुरित होता है। आनन्द ज्ञान वृक्ष पर लगने वाला फल है इसलिए वैदिक दर्शन ब्रह्मानन्द की प्राप्ति जीवन का लक्ष्य मानता है। आनन्द देने वाला ज्ञान क्या है- यह विषय कल रखा जायगा। आज हम यहीं समाप्त करते हैं। ओ३म् शान्ति !!

उपस्थित भद्र पुरुषों और श्रद्धा के योग्य माताओं,

गत रात्रि अपनी चर्चा का विषय आध्यात्म था। आध्यात्म का अर्थ जीवन की विश्व ब्रह्माण्ड व्यापी अवधारणा से है। इस अवधारणा का अर्थ है अंश (जीवन) का अंशी (सत्ता) के साथ संगति होना। जीवन को संकुचित विकृति से मुक्त करके व्यापक चैतन्य से जोड़ना। आध्यात्म की नींव भय अथवा अन्ध विश्वास नहीं है। ज्ञान इसकी आधार शिला है। जागतिक जीवन की समस्त उलझनों का मूल कारण जीवन की ब्रह्माण्डीय दृष्टि का अभाव है। अनन्त विराट विश्व ब्रह्माण्ड के परिप्रेक्ष्य में जीवन का मूल्यांकन करने का आग्रह अध्यात्म करता है। ताकि उन सम्बन्धों को समझा जा सके जो हमारे और पर्यावरण के मध्य हैं और जिनका असन्तुलित या अन्यथा होने का अर्थ कष्टप्रद अव्यवस्था का फैलना है। जीवन दृष्टि के आध्यात्मिक होने का अर्थ है जैव चेतना का अनन्त के साथ तद्रूप होना, परिच्छिन्न का अपरिछिन्न के साथ संयुक्त होना। आध्यात्म वस्तुतः जीवन में ज्ञान का अवतरण है। ज्ञानोपलब्धि के लिए दर्शन, श्रवण, मनन और निदिध्यासन की चतुःसूत्री व्यवस्था है। ज्ञानोपलब्धि की पात्रता शान्त मनःस्थिति और अप्रतिबद्धता है। आज हम इस सन्दर्भ में चर्चा को आगे बढ़ायेंगे।

एक कलाकार चला जा रहा था। उसने स्वयं को कला के लिए समर्पित किया हुआ था। मार्ग में, एक बस्ती के पास उसने विशाल संगमरमर की प्रस्तर शिला देखी। कलाकार रुक गया। उसी पारखी दृष्टि ने देखा कि परतों के नीच शिला में अद्भुत सौन्दर्य दबा पड़ा है। उसके अपना झोला उतारा, छेनी हथौड़ी निकाली और संकल्प किया कि वह शिला में दबे सौन्दर्य को बाहर निकालेगा। कलाकार ने यात्रा स्थगित कर दी। धूप, वर्षा, आंधी, तूफान कोई भी उसे विचलित न कर सका। रात-दिन छेनी हथौड़ी चलती रही। आस-पास के लोग आश्चर्य चकित होकर उसे देखते थे। कलाकार ने जब जमकर हथौड़ा चलाना शुरू किया और शिला की मोटी मोटी पर्तें चटक चटक कर टूटने लगीं तो आसपास के लोग घबरा गये। उस शिला को रात दिन देखते रहने से एक भावनात्मक सम्बन्ध लोगों ने बना लिया था। उन्हें लगा यह अजनबी इस प्रस्तर को तोड़ रहा है। टुकड़े टुकड़े कर रहा है। परतें चटक कर टूटतीं तो उन्हें ऐसा लगता मानों उन्हें ही तोड़ा जा रहा हो। उन्होंने कलाकार से प्रार्थना की कि शिला को न तोड़े। अनजाने समय से यहां इसी प्रकार पड़ी है और हम नहीं चाहते हैं कि कोई इसे नष्ट करे। कलाकार ने लोगों को बताया कि वह इसे तोड़ नहीं रहा है बल्कि इन परतों में छिपे सौन्दर्य को रूप दे रहा है। उसने फिर अपना काम शुरू कर दिया। प्रत्येक चोट के साथ शिला की परतें झड़ने लगीं। लोगों ने सोचा शायद यह धन के लिए ऐसा कर रहा है क्यों न इसे कुछ देकर शिला को बचाया जाय। बस्ती वालों ने उसे धन जमीन का प्रलोभन दिया किन्तु कलाकार ने कुछ भी नहीं स्वीकारा और अपने कार्य में लगा रहा। अब बस्ती के लोग क्रोधित हो गये। उन्होंने कलाकार की निन्दा करनी प्रारम्भ की। अधिक उग्र लोगों ने उस पर पत्थर मारे, भय दिखाया अपमानित किया। कलाकार अनासक्त भाव से सबकुछ सहता रहा और अपने काम मे लगा रहा। धीरे-धीरे छिपा सौन्दर्य उभरने लगा। प्रत्येक चोट के साथ शिला का रूप निखरता आ रहा था। अन्ततो-गत्वा वह चिर प्रतीक्षित क्षण आ ही गया जब सारी अनावश्यक परतें झड़ गयीं और दबा हुआ सौन्दर्य पूर्ण मुक्त हो गया। सौन्दर्य मूर्ति ने कलाकार से वरदान मांगने को कहा। 'वरदान? क्या वरदान मांगूँ?' कलाकार ने विस्मय से पूछा। 'कहो तो तुम्हें कलाकारों में अग्रणी कर दूँ? प्रत्येक कलाकार तुम्हारे चरणों में नतमस्तक होगा। कहो तो तुम्हें अकूत धन दूँ- बोलो कलाकार क्या चाहते हो?' कलाकार ने शान्त गम्भीर स्वर में कहा- 'मुझे यह वरदान दो, जब लोग तुम्हें देखें तुम्हारी गरिमा से प्रभावित हों तो उनकी श्रद्धा सृष्टि रचयिता में दृढ़ हो न कि वह मुझे पूजने लगें।' कौन था वह कलाकार? जानते हो? वह था आधुनिक भारत का शिल्पी ऋषि दयानन्द जिसने अविद्या और अज्ञान में दबे वैदिक संस्कृति के दिव्य सौन्दर्य को देखा। हजारों शताब्दियों से उस पर अंधविश्वास की परतें चढ़ती चली गईं थीं। वैदिक आध यात्म संस्कृति जड़ हो गई थी। उस महान् कालाकार ने अपनों का आक्रोश, अन्याय, सबकुछ स्वीकार किया, किन्तु देश के उद्धार का पवित्र कर्म करते रहे। उनके तर्क की वज्र चोट से घनीभूत अंधविश्वास की तहें टूटने लगीं। प्रत्येक चोट सृजनात्मक थी, अपने आप में दिव्य थी। आखिर स्वर्णिम विहान हुआ जब संसार ने वेद रूप अलौकिक सौन्दर्य देखा और उसकी दिव्यता के आलोक में सृष्टिकर्ता परमात्मा को समझा।

'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना प्रत्येक आर्य का परम धर्म है।'

-ऋषि दयानन्द

वेद का आधार पर भारतीय संस्कृति को गठन किया गया था। पारिवारिक सामाजिक जीवन का प्रत्येक विधि विधान वेद से लिया गया था। आर्य जीवन पद्धति वेद की सजीव व्याख्या थी। यह राष्ट्र का मूल था। ज्ञान-विज्ञान की अनंत शाखाएँ इस मूल से फूटी थीं, जिन पर लगे रसयुक्त फलों को खाकर यह राष्ट्र पोषित हुआ था। जब तक हम मूल से जुड़े रहे, हमारी प्राणशक्ति इतनी प्रबल रही कि जब-जब विदेशी हमसे टकराए, नष्ट हो गए। हमने उन्हें आत्मसात कर लिया। वे हमारी शक्ति और सम्पन्नता के स्वर्णिम दिन थ। धीरे-धीरे अत्यधिक

सम्पन्नता से दुर्गुण उत्पन्न होते गए, जैसा कि नियम है अधिक आराम रोगी कर देता है। वैसे ही राष्ट्र में आवश्यकता से अधिक धन होने पर वह रुग्ण हो जाता है। जब कोई भी सभ्यता अत्यधिक सभ्य हो जाती है और उसकी भोगशक्ति अत्यधिक संवेदनशील हो जाती है तब उसे नई बर्बरता जीत लिया करती है। यह देश सम्पन्नता के उस चरम स्थान पर पहुँच गया था कि यह सोने की चिड़िया बन गया। चिड़िया की नियति तो पिंजड़ में बंद होना है यह चरितार्थ हुआ। प्रायः तथाकथित आधुनिक चिन्तक यह आरोप करते हैं कि प्राचीन संस्कृति की दोषपूर्णता ने प्रगति नहीं करने दी। इस प्रकार का सोचना नितान्त निकम्मापन (Absurd) है। इस देश के पतन का कारण अत्यधिक सम्पन्नता थी। राष्ट्र-जीवन की दो कसौटियां होती हैं। राष्ट्र की शक्ति को परखने के दो ही अवसर होते हैं। पहली संघर्ष की कसौटी होती है (Test of adversity), और दूसरी सम्पन्नता की कसौटी (Test of prosperity), संघर्ष और विपत्ति की कसौटी पर राष्ट्र का नाश नहीं होता है। विपरीत परिस्थिति और खतरे से राष्ट्र का शक्तिशाली रूप बना करता है। युद्ध या युद्ध की आशंका शक्ति की सुप्त संभावनाओं को जाग्रत करके चरित्र का निर्माण करती है और आत्म विश्वास उत्पन्न करती है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि इस कसौटी पर राष्ट्रों का नाश नहीं के बराबर हुआ है किन्तु सम्पन्नता की कसौटी पर प्रायः राष्ट्र नष्ट हो गये हैं। सम्पन्नता संघर्ष और भय के समाप्त होने पर बढ़ा करती है। इस अवधि में भोग प्रवृत्ति प्रदीप्त होकर सद्गुणों को भस्म करना प्रारंभ कर देती है। इस देश के साथ ऐसा ही हुआ। सम्पन्नता के आधिक्य ने सारे राष्ट्र को भोगवादी बना दिया। बड़े-बड़े मंदिरों का निर्माण किया गया। सोने-चाँदी हीरे-जवाहरातों से पत्थर की मूर्तियाँ सजा दी गईं। मन्दिरों के प्रांगण देवदासियों के पायलों से झंकृत होने लगे। परमात्मा को परकीया प्रेमी के रूप में बदल दिया गया। उसका आकार रूप कृष्ण के नाम से पूजा जाने लगा। राधा जो उनकी पत्नी नहीं थीं प्रेमिका बनाकर साथ कर दी गयीं। भोगवाद घृणित पराकाष्ठा थी कि परमात्मा भी 'प्रेमी-प्रेमिका' के जोड़े में आ गये। संगीत नृत्य जीवन की परमावश्यकता हो गयी। दासी-प्रथा, बहु पत्नी प्रथा, द्यूत, मद्य, मांस, व्यभिचार कौन सा ऐसा दुर्गुण नहीं था, जो व्यापक स्तर पर न हो। इन दुर्गुणों ने राष्ट्र की संगठन शक्ति, आत्मविश्वास और सद्गुणों को भ्रष्ट कर दिया। सत्यवादी निःस्पृय विद्वानों के स्थान पर भोगविलासी, नृत्यांगनाओं, संगीतज्ञों, चाटुकारों का वर्चस्व स्थापित हो गया। सद्गुणों के स्थान पर धन की पूजा होने लगी।

'सर्वे गुणाः कांचनभाश्रयन्ति'

सारे गुण कांचन में हैं इस धारणा ने धन के प्रति अदम्य भूख पैदा कर दी 'अर्थी दोषान्नपश्यति' स्वार्थ और लोभ की प्रचुरता ने गुणा व गुणों को समझने परखने की विवेक बुद्धि नष्ट कर दी।

(क्रमशः)

काव्यायन

शास्त्री-जयन्ती

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

भारत माँ के लाल प्रिय, लाल बहादुर नाम।
कद से छोटे थे भले, था व्यक्तित्व ललाम।।

रहन-सहन में सादगी, आत्मिक शक्ति असीम।
वाणी तीक्ष्ण, विचार मृदु, जैसे हो कटु नीम।

'जय जवान' के साथ हो, जय किसान का घोष।
स्वाभिमान रक्षार्थ था, शास्त्री का आक्रोश।।

शास्त्री ने दिखला दिया, आशापूर्ण विहान।
क्षेत्र और रणक्षेत्र में, भारत बना महान।।

शास्त्री ने लतिया दिया, पाक बन गया मुर्ग।
वीरोचित बल-बुद्धि से, भेद दिया खल-दुर्ग।।

अन्न बचत हित व्रत रखो, सोमवार की शाम।
इस निर्णय से 'लाल' का, फैला जग में नाम।।

शिथिल पड़ा नेतृत्व है, भारत नहीं अशक्त।
लिखा शास्त्री ने विजय, देकर अपना रक्त।।

दो अक्टूबर जन्मदिन, शास्त्री! तुम्हें प्रणाम।
छवि उज्ज्वल हो देश की, आओ! भारत-धाम।।

–117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ–226 022

कलम के सिपाही

❑उमेश 'राही'

सिर्फ अंधेरों के सामने ही नहीं, हम जमकर अड़े हैं,
जो वेदना दे, उन उजालों से भी हमेशा लड़े हैं।।

अपहरण कर सूर्य का, जो किरण का व्यापार करते,
जाति का ज़हर देकर हमें, जो स्वयं का आधार रचते!

इंसानियत के उन बाजीगरों को, हमें तोड़ना है,
जो सियासत की नापाक बैसाखियों पर खड़े हैं!

धर्म का उठाकर ध्वज, जो मंदिरों में रचाते रास हैं,
मस्जिदों में नफरतों के स्वर, करते गुरु का उपहास हैं।

सिखाना उन्हें है कुरान औ गीता का सच्चा सबक,
जो धर्म की शाल ओढ़े, मखमली बिस्तरों पर पड़े हैं।।

गाँव में सौगात आती, नहीं निर्धनों के काम आती,
अबला की अस्मिता नहीं सुरक्षा राज-पथ बचाती।

शाख पर पत्ते बचे हैं, फल तो बाहुबलियों के लिए हैं।
काटना है वृक्ष को जिसमें, विनाश की फलती जड़ें हैं।

देश-पूजा का दंभ भरते, वे धन विदेशों में जमा करते,
गणतंत्र-गांधी के तीन बंदर, बुरा न देखते, न बोलते!

कलम के सिपाही डरने लगे, सत्य कहने से बचने लगे हैं,
देश-हित जो मरे, फूल उनकी समाधियों पर चढ़े हैं।।

–'कला–सदन', 363/ए, मोती नगर, लखनऊ

अंतिम यात्रा

❑श्रीमती मंजुला जौहरी

छोटी यात्रा के लिए, होते नित तैयार।
अंतिम यात्र हित मगर, करते नहीं विचार।।

बन ईश्वर की मोहरे, खेले दाँव अनेक।
विजित पराजित, रोग या, भोग ज्ञान अविवेक।।

अब चिन्तन किस काम का, त्याग दिया संसार।
करो कर्म अनुसार ही, स्वर्ग नरक अभिसार।।

पंचतत्व मय देह यह, हो जाती है क्षार।
साथ न कुछ भी जायगा, निष्फल सोच विचार।।

अंतिम पल का कीजिए, स्वागत सदा सहर्ष।
दूर चित्त से कीजिए, माया मोह अमर्ष।।

काल साथ हो जायेंगे, धूमिल सभी निशान।
नाम पट्टिका धूसरित, धन वैभव पहचान।।

–बी 3/59सी, केशवपुरम, नई दिल्ली–110035

काँटे भी जरूरी हैं !

❑डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर

तुम आये ज़िन्दगी में, मेहरबानी,
हुई गुलज़ार मेरी ज़िन्दगानी।

ये काँटे भी ज़रूरी हैं चमन में,
गुलों की कर रहे ये पासबानी।

नहीं काम आ सके जो दूसरों के,
वो फिर किस काम की यारो! जवानी।

न हम भूलेंगे हर्गिज़ ऐ जवानो!
वो सरहद पर तुम्हारी जाँफ़िशानी।

न करिये इस कदर दोहन धरा का,
सतायेंगी बलायें आसमानी।

वो मजनूँ हो कि राँझा हो कि फ़र्हाद,
ग़ज़ब होती है आशिक़ की कहानी।

अचानक मिल गये वह आज 'नासिर'
हुई ताज़ा कई यादें पुरानी।

–जी–02, लोकपुर रेजीडेन्सी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

वाणी का महत्त्व

❑(श्रीमती) कृष्णा बजाज

मन भावों को व्यक्त करे,
वाणी ही वह साधन है।
यश से मालामाल करे,
वाणी ही ऐसा धन है।।

वाणी में ऐसा जादू है,
पत्थर को भी मोम करे।
मित्र बने जग में सब उसके,
वाणी ही संताप हरे।।

जग में भटके मानव को,
सत्पथ का ज्ञान प्रदान करे।
भटकन से उसे फिर छुड़ाकर,
वाणी सुख का दान करे।।

दुखियों के दुख हरने को,
मीठी वाणी काम करे।
कष्टों से जो पीड़ित हैं,
वाणी उनके भी कष्ट हरे।।

–संरक्षिका, माडल टाउन आर्य समाज, पीलीभीत

हर्ष–चतुष्पदी

पत्थर और भगवान

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

जिन्दगी दुश्मन नहीं, जो सर झुकाये।
जिन्दगी सामंजस्य से जीना सिखाये।
झुकना अदब जीवन की ये पहचान है–
अकड़ जिसमें, वह नहीं बलवान है।।

'जेहि विधि राखे राम'– है मजबूरी,
अपने ढँग से जियो, है यही जरूरी।
'कर्मसु कौशलम्' से व्यक्ति बनता महान है
हथौड़े की चोट खाकर, पत्थर बनता भगवान है।

–अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

कालजयी काव्य

तीर्थ यात्रा

❑श्रीश्यामनारायण पाण्डेय

थाल सजाकर किसे पूजने
चले प्रात ही मतवाले?
कहाँ चले तुम राम नाम का
पीताम्बर तन पर डाले?

कहाँ चले ले चन्दन अक्षत
बगल दबाये मृगछाला?
कहाँ चली यह सजी आरती?
कहाँ चली जूही-माला?

ले मुंजी उपवीत मेखला
कहाँ चले तुम दीवाने?
जल भरा कमण्डलु लेकर
किसे चले तुम नहलाने?

मौलसिरी का यह गजरा
किसके गल से पावन होगा?
रोम कण्टकित प्रेम-भरी
इन आँखों में सावन होगा?

चले झूमते मस्ती से तुम,
क्या अपना पथ आये भूल?
कहाँ तुम्हारा दीप जलेगा,
कहाँ चढ़ेगा माला-फूल?

इधर प्रयाग न गंगासागर,
इधर न रामेश्वर, काशी।
कहाँ किधर है तीर्थ तुम्हारा?
कहाँ चले तुम संन्यासी?

मुझे न जाना गंगासागर,
मुझे न रामेश्वर काशी।
तीर्थराज चित्तौड़ देखने को,
मेरी आँखें प्यासी।।

अपने अचल स्वतंत्र दुर्ग पर,
सुनकर बैरी की बोली।
निकल पड़ी लेकर तलवारें,
जहाँ जवानों की टोली।।

जहाँ आन पर माँ-बहनों की,
जला-जला पावन होली।
वीर-मण्डली गर्वित स्वर से,
जय माँ की जय जय बोली।।

सुन्दरियों ने जहाँ देश-हित,
जौहर-व्रत करना सीखा।
स्वतंत्रता के लिए जहाँ,
बच्चों ने भी मरना सीखा।।

वहीं जा रहा पूजा करने,
लेने सतियों की पद-धूल।
वहीं हमारा दीप चलेगा,
वहीं चढ़ेगा माला-फूल।।

जहाँ पद्मिनी जौहर-व्रत कर
चढ़ी चिता की ज्वाला पर,
क्षण भर वहीं समाधि लगेगी,
बैठ इसी मृगछाला पर

नहीं रही, पर चिता-भस्म तो
होगा ही उस रानी का।
पड़ा कहीं न कहीं होगा ही,
चरण-चिन्ह महरानी का।।

उस पर ही ये पूजा के सामान
सभी अर्पण होंगे।
चिता-भस्म-कण ही रानी के
दर्शन-हित दर्पण होंगे।।

(जौहर महाकाव्य से साभार)

विजया दशमी

❑उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ'

ध्यान पर ब्रह्मबाण छोड़ा तब राघव ने,
क्षुब्ध हुए सिन्धु साद्रि-वसुधा प्रवेपमान।
सिहर फणीश उठे व्योमकेश-विधि-विष्णु,
वायु-गति अवरुद्ध भानु-प्रभा लोपमान।
द्वन्द्व-रथी युद्ध देख स्तंभित-चकित देव,
बोले 'राम-रावण के युद्ध का न उपमान'।
तत्क्षण ही राम शर-विद्ध हुआ शत्रु उर,
गिरा छिन्न शीश, बीसभुज अद्रि के समान।।

'जय-जय धर्मरथी' महा-रव गुंजरित,
तीनों लोक प्रमुदित, मोद का न वार पार।
देव-यक्ष-किन्नर-गन्धर्व-अप्सरा-महर्षि-
नाग-नर-वानरों का जयोच्चार बार बार।
सोमपान में प्रवृत्त नृत्य-गान में प्रमत्त,
अन्तरिक्ष से अपार बरसी सुमन धार।
धर्म की अधर्म पर, सत्य की असत्य पर,
जीत हुई, मिटा अत्याचार अघ-अन्धकार।।

–538क/88, त्रिवेणी नगर प्रथम, सीतापुर रोड, लखनऊ

गीतिका

❑राजाभइया गुप्ता 'राजाभ'

बहरा है, गूँगा है, जो वह फैसला कैसे करे?
जो निराशा में है डूबा, हौसला कैसे करे?
जिसकी नीयत का सभी को हाल सब मालूम है,
उनकी बातों पर यकीं, कोई भला कैसे करे?
मान बैठा जो स्वयं को बिन लड़े हारा हुआ,
विजयश्री उसका वरण बोलो भला कैसे करे?
'राजाभ' जीवन मूल्य जिनकी सोच में हैं ही नहीं,
शुभ आचरण की आश उनसे तब भला कैसे करे?

–616/22, बसंत विहार, सेमरा गौढ़ी, निकट विश्वनाथ पार्क, लखनऊ

राजस्थान-समाचार

समाज सेवा की अर्द्धशताब्दी

देश के सर्वप्रिय व्यक्तित्व के रूप में प्रख्यात श्री अर्जुनदेव चड्ढा 'आर्य लोक रत्न' की समाज सेवा को प्रदर्शित करने वाली सुन्दर स्मारिका का प्रकाशन शहीद प्रकाशन, ४-प, २८ विज्ञान नगर, कोटा राजस्थान द्वारा किया गया है। स्मारिका के प्रधान सम्पादक हैं श्री ओम प्रकाश आर्य। नयनाभिराम चित्रों से सजी हुई इस स्मारिका में समाज सेवी श्री अर्जुनदेव चड्ढा के कार्यकलापों का बखूबी निदर्शन किया गया है।

18वाँ सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के तत्वावधान में सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव ३१ अक्टूबर एवं १, २ नवम्बर २०१५ को नवलखा महल उदयपुर में मनाया जा रहा है जिसमें देश के चोटी के विद्वान्, वक्ता और भजनोपदेशक गण भाग ले रहे हैं। श्री अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष ने अधिक से अधिक संख्या में पहुँचकर देश-दर्शन के साथ ही सत्संग लाभ प्राप्त करने की अपील की है।

132वाँ ऋषि निर्वाण समारोह अजमेर

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्वावधान में दीपावली पर्व पर ऋषि निर्वाण समारोह मनाया जाता है। इस वर्ष यह समारोह २० से २२ नवम्बर तक मनाया जा रहा है। समारोह में अनेक रोचक तथा ज्ञानवर्द्धक एवं प्रेरक कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे जिनमें ऋग्वेदपरायण यज्ञ, वेद गोष्ठी, चतुर्वेद कंठस्थीकरण प्रतियोगिता, विद्वत् सम्मान प्रमुख हैं। इस समारोह में देश-विदेश के प्रमुख आर्य विद्वान् एवं भजनोपदेशक गण भाग ले रहे हैं। सभा ने इस समारोह हेतु आर्य जनों से सहयोग के साथ उपस्थित होने का अनुरोध किया है।

से.नि.प्राचार्या का सम्मान

राजस्थान शिक्षा विभाग से सेवानिवृत्त प्राचार्या श्रीमती हेमंत मिश्र, एम.ए. (१९५८), पत्नी डॉ.वी.के.मिश्र को १ अक्टूबर २०१५ के अन्तर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस पर डी.ए.वी.कालेज, अजमेर के प्रांगण में सीनियर सिटीजन सोसाइटी, अजमेर द्वारा ८०वर्ष की आयु पर सम्मानित किया गया। श्रीमती मिश्र इस संस्थान की जिसके ३००० से अधिक सदस्य हैं, की एक मात्र महिला संरक्षिका सदस्य हैं। श्रीमती मिश्र की प्रशासनिक दक्षता के अतिरिक्त कवयित्री के रूप में भी पहचान है। गत वर्ष इनकी कविताओं का संग्रह 'अकुलाहट' प्रकाशित हुआ था। आप स्काउट गाइड एवं फैलोशिप, अजमेर की सक्रिय सदस्या हैं। आपके पुत्र सुधीर एक्स.ई.एन. हैं व पुत्रवधू डॉ.रीना राजकीय कालेज में व्याख्याता है। पुत्री डॉ.साधना एवं उसकी अनुजा सुरभि सोफिया से बी. एस-सी. एवं एम.बी.ए. है एवं विवाहिता हैं। श्रीमती मिश्र के दो पौत्र दो पौत्रियां हैं। 'आर्य लोक वार्ता' की शुभकामनाएँ!

कानपुर-समाचार

आर्य समाज बर्रा कानपुर का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज बर्रा का वार्षिकोत्सव २७ से २९ नवम्बर २०१५ तक समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। उत्सव में आर्य जगत के ख्यातिलब्ध विद्वान एवं उपदेशक तथा भजनोपदेशक गण पधार रहे हैं। महिला सम्मेलन की अध्यक्षता हेतु प्रख्यात विदुषी डॉ.(श्रीमती) निष्ठा वेदालंकार को आमंत्रित किया गया है। *(रघुनाथ सिंह आर्य)*

वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज बर्रा, कानपुर का वार्षिक निर्वाचन ११.०९.१५ को सम्पन्न हुआ जिसमें चुने गये पदाधिकारी इस प्रकार हैं- प्रधान-सत्येन्द्र बाबू, उपप्रधान-जगत नारायण आर्य, वीरसिंह चौहान, श्रीमती शैल सक्सेना, मंत्री-डॉ.जी.पी.सिंह, उप मंत्री-डॉ.उत्कर्ष सक्सेना, सुश्री ऋतु सक्सेना, हर्ष जौहरी, कोषाध्यक्ष-अक्षय चौधरी तथा पुस्तकाध्यक्ष- सुश्री संगीता मिश्र।

टाँडा-समाचार

आर्य समाज टाँडा का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज टाँडा (जिला-अम्बेडकर नगर) का वार्षिक उत्सव २३ से २६ नवम्बर २०१५ को मनाया जायगा। उत्सव में देश के प्रख्यात साधु संन्यासी, प्रवक्ता एवं भजनोपदेशक गण पधार रहे हैं। प्रतिदिन प्रातःकाल यज्ञ एवं प्रवचन, अपराह्न महिला सम्मेलन तथा सायंकाल ६ से ९ बजे तक व्याख्यान तथा भजनोपदेश होंगे। प्रतिदिन यज्ञ के पश्चात् शंका समाधान की सुविधा दी जायगी।

प्रथम दिन नगर कीर्तन तथा शोभायात्रा का अपना आकर्षण होगा। उत्सव में राष्ट्ररक्षा सम्मेलन, वेद सम्मेलन तथा आर्य सम्मेलन का भी आयोजन किया जायगा। श्री दीनानाथ शास्त्री, डॉ.ज्वलंत कुमार शास्त्री, डॉ.प्रशस्यमित्र शास्त्री, डॉ.निष्ठा विद्यालंकार, आचार्या प्रियंवदा जी एवं डॉ.वेद प्रकाश आर्य इत्यादि विद्वानों को आमंत्रित किया गया है। इसके अलावा उ.प्र.के बाहर के विद्वान् भी उत्सव में भाग ले रहे हैं। समस्त कार्यक्रम श्री आनन्द कुमार आर्य के निर्देशन में सम्पन्न होंगे।

सूचना

'आर्य लोक वार्ता' की २०१५ हेतु सहयोग राशि प्राप्ति हेतु अधिकृत प्रतिनिधि-
१. कानपुर - डॉ.जी.पी.सिंह, बर्रा-४, मो.नं. ९४५०१२५६१४
श्री रघुनाथ सिंह आर्य, फोन नं.-०५१२-२२०११५१
२. सण्डीला (हरदोई) - डॉ.सत्य प्रकाश, सदर बाजार सण्डीला
मो.नं.-९४५०८५८७५० (सं.)

सीतापुर-समाचार

संक्षिप्त समाचार

❑आर्य समाज बिसवाँ, सीतापुर का वार्षिकोत्सव ३ से ५ अक्टूबर २०१५ को समारोहपूर्वक मनाया गया। उत्सव में आचार्य विश्वव्रत शास्त्री वेदोपदेशक, लखनऊ, स्वामी वीरेन्द्र जी, श्रद्धानन्द जी भजनोपदेशक के अलावा सीतापुर के सुयोग्य प्रचारकों एवं पुस्तक विक्रेताओं ने भाग लिया।

❑आर्य समाज रामपुर मथुरा का वार्षिक उत्सव २१ से २३ सितम्बर को सम्पन्न हुआ।

❑खैराबाद के समीपवर्ती ग्राम अलावल पुर में ६ से ८ अक्टूबर को उत्सव आयोजित किया गया।

❑ग्राम ईसानगर में अक्टूबर के अंतिम सप्ताह में वार्षिकोत्सव आयोजित हो रहा है। श्री रामावतार जी अलीगढ़ तथा श्रीमती गीता देवी बहराइच के पधारने का समाचार है। इसके साथ ही जनपद के श्री नेतराम आर्य एवं स्वामी महावीर की सेवाएँ भी समाज को सुलभ रहेंगी।

❑सीतपुर के प्रसिद्ध वैद्य कविराज पं.योगेन्द्र दत्त त्रिपाठी के सुपुत्र भालेन्द्र दत्त त्रिपाठी 'सुबोध' का पिछले दिनों हृदयाघात से निधन हो गया। वे वैद्य और कवि थे। हार्दिक श्रद्धांजलि!

❑आर्य समाज मिसरिख का वार्षिक उत्सव १३ से १५ नवम्बर तक समारोह पूर्वक मनाया जायगा।

❑श्री नेतराम आर्य एवं रामेन्द्र आर्य के साथ गत २० सितम्बर को वीरजी द्वारा निम्नांकित स्थानों में जनसम्पर्क किया गया तथा आर्य लोक वार्ता के स्वाध्याय की अपील की गई- उरदौली, महोली, कुसैला, दूलामऊ, देवगया, कुतुब नगर, मिसरिख, रामकोट, रामनगर।

(वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी' द्वारा)

सूचना

सीतापुर जनपद के समस्त आर्य लोक वार्ता के सहयोगियों एवं पाठकों से नम्र निवेदन है कि वे कृपया २०१५ हेतु अपनी सहयोग राशि श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', १५०, नई बस्ती, सीतापुर मो.-९७९३२९६८२९ के पास अवश्य जमा कर दें तथा रसीद प्राप्त कर लें। वीरजी घर के अलावा मेडिकल स्टोर, ग्रीकगंज में भी मिल सकते हैं। -सं.

आजमगढ़-समाचार

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज आजमगढ़ वेद मन्दिर, डी.ए.वी.इंटर कालेज का वार्षिक उत्सव २५ से २७ सितम्बर २०१५ को समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर श्री कुनेन्द्र शास्त्री, आर्योपदेशक, कानपुर तथा श्री त्रियुगी नारायण पाठक भजनोपदेशक, गोरखपुर ने अपने सारगर्भित एवं समयोपयोगी विचारों द्वारा समाज को वैदिक संदेश प्रदान किया। कार्यक्रमों की अध्यक्षता श्री रमेश चन्द्र अग्रवाल प्रधान आर्य समाज ने की तथा संचालन डॉ.पीयूष श्रीवास्तव ने किया। *(कपिलदेव राय, पूर्व प्रवक्ता द्वारा)*

श्री विजयधारी पाण्डेय मंत्री बने

डी.ए.वी.इंटर कॉलेज के से.नि. शिक्षक श्री विजयधारी पाण्डेय को से. नि.माध्यमिक शिक्षक संघ, आजमगढ़ जनपद का मंत्री चुना गया है। आशा है, पाण्डेय जी द्वारा शिक्षकों की समस्याओं को समुचित समाधान मिल सकेगा।

आर्य्य लोक वार्ता

'ऋत्विक-मंडल'

(प्रतिवर्ष १२०० रु. या अधिक सहयोगकर्त्ता)

माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास, ज्वालापुर, **हरिद्वार**; विद्यासागर फाउण्डेशन, **मेरठ**; अम्बिका प्रसाद एडवोकेट, **लखनऊ**; आनन्द कुमार आर्य, **कोलकाता**; पाल प्रवीण, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती कमलेश पाल, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती प्रमोद कुमारी, अलीगंज, **लखनऊ**; जगदीश खत्री, हिन्द नगर, **लखनऊ**; ओजोमित्र शास्त्री, महावीरगंज, **लखनऊ**; अभिषेक, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती गीतांजलि, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती मिनी स्वरूप, **नई दिल्ली**; कर्नल पाल प्रमोद, **मेरठ**; अरविन्द कुमार, आर्कीटेक्ट, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्रीमती शालिनी कुमार, आर्कीटेक्ट, गोमती नगर, **लखनऊ**; प्रधानाचार्या, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज, टाण्डा, **अम्बेडकरनगर**; श्रीमती मधुर भंडारी, **नई दिल्ली**; रमेश चन्द्र त्यागी, गोमती नगर, **लखनऊ**; प्रो.आनन्द वैद्य, राजाजीपुरम, **लखनऊ**; पीयूष गुप्त, **सिंगापुर**; श्री रमनलाल अग्रवाल, नजीराबाद, **लखनऊ**; श्रीमती प्रकाश अग्रवाल, **बरेली**; कृष्ण स्वरूप चौधरी, गोमती नगर, **लखनऊ**; ले.कर्नल चन्द्रमोहन गुप्त, **लखनऊ**; डॉ.सी.वी.पाण्डेय, सर्वोदय नगर, **लखनऊ**; श्रीमती प्रमिला पाल, मवाना, **मेरठ**; दीपक कुमार दर्शन, अमीनाबाद **लखनऊ**; बी.एन.टण्डन, **बहराइच**; अनूप टण्डन, **मेरठ**; वेद प्रकाश बटुक, **मेरठ**; सतपाल महाजन, **गुड़गाँव**; प्रणव श्रीवास्तव, **अहमदाबाद**; नरेन्द्र भूषण, जानकीपुरम, **लखनऊ**; आर. सी. यादव, सत्या क्लीनिक, इन्दिरा नगर, **लखनऊ**; चौधरी रणवीर सिंह, प्रधान, आर्य समाज, **सीतापुर**; श्रीमती मंजू रेलन, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्रीमती मनीषा त्रिवेदी, **दुबई**; कौशल किशोर श्रीवास्तव, नया तिलक नगर, **लखनऊ**; अर्जुनदेव चढ्ढा, कोटा, **राजस्थान**; नरसिंह पाल एडवोकेट, राजीव नगर, **लखनऊ**; नरदेव आर्य, एल.डी.ए.कालोनी, **लखनऊ**; श्रीमती मीना दीक्षित, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्रीमती इन्द्रा शर्मा, डालीबाग,**लखनऊ**; इं.जे.पी.अग्रवाल, गायत्रीलोक, कनखल, **हरिद्वार**; श्रीमती प्रियदर्शिनी मित्तल, **बंगलौर**; आर.के.शर्मा, जानकीपुरम, **लखनऊ**; पं.रामलाल आर्य, **अमेरिका**; सतीश निझावन, आदर्शनगर, **लखनऊ**; बाँके बिहारी 'हर्ष', अवध मोटर वर्क्स, **फैजाबाद**; राम मनोहर वैश्य, बेनीगंज, **हरदोई**; श्रीमती रमा आर्य 'रमा', नेवाजगंज, **लखनऊ**; श्रीमती मालती त्यागी, गोमती नगर, **लखनऊ**; देवेन्द्र नाथ चौधरी, हसनगंज पार, **लखनऊ**; मदन मोहन जोशी, आदर्श नगर, **लखनऊ**; श्रीमती कृष्णा बजाज, **बरेली**; श्रीमती रेनू भसीन, चन्द्रनगर, **लखनऊ**; सुरेन्द्र प्रताप जौहरी, आदर्शनगर, **लखनऊ**; श्रीमती प्रियंका शर्मा, जानकीपुरम, **लखनऊ**।

लखनऊ-समाचार

वैवाहिक जयन्ती

श्री पाल प्रवीण एवं श्रीमती कमलेश की ५३वीं वैवाहिक जयन्ती योगाश्रम, अलीगंज, सेक्टर-डी में १४.१०.१५ को यज्ञ-सत्संग के दिव्य आयोजन के रूप में मनाई गई। यह आयोजन पाल प्रवीण के सुपुत्र श्री अभिषेक एवं पुत्रवधू श्रीमती गीतांजलि द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री सेवकराम आर्य, सुरेश चन्द्र मिश्र, श्रीमती सीता मिश्र, शिवशंकरलाल वैश्य, देवेन्द्र स्वरूप गुप्त, एस.आर.नागपाल, श्रीमती नागपाल, डी.पी.शुक्ल, आर.एस.यादव, एस.एस.जुत्शी, डॉ.निष्ठा विद्यालंकार, सुधीर कुमार एडवोकेट, अमित वीर त्रिपाठी सहित अनेग गण्यमान व्यक्तियों ने प्रवीण दम्पति के प्रति शुभकामनाएँ अर्पित कीं और उनके दीर्घायुष्म की कामना की। यज्ञोपरान्त श्री पाल प्रवीण एवं कमलेश जी के सामाजिक कार्यकलापों की चर्चा करते हुए वक्ताओं ने कहा वैभव वृद्धि तो कहीं भी हो सकती है किन्तु वैदिक विचार धारा सर्वत्र नहीं होती। श्रीमती कमलेश एवं पाल प्रवीण जी ने वैदिक विचार धारा से संयुक्त होकर अपने जीवन को सर्वजन उपयोगी और अभिनन्दनीय बना दिया है।

सतीश अवस्थी स्मृति काव्यगोष्ठी

सांस्कृतिक, सामाजिक एवं साहित्यिक संस्था अनन्त अनुनाद तथा कमल संगीत अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में डॉ.सतीश अवस्थी स्मृति संध्या का आयोजन श्री नरेन्द्र भूषण की अध्यक्षता में दिनांक १३.०९.१५ को किया गया जिसमें मुख्य अतिथि वीरेन्द्र चन्द्र राय तथा विशिष्ट अतिथि अशोक पाण्डेय 'अशोक' थे। घनानन्द पाण्डेय 'मेघ' की वाणी वन्दना तथा अकादमी के सदस्यों द्वारा प्रस्तुत भक्ति गीतों से कार्यक्रम का आरम्भ हुआ। गोष्ठी में सुरेश कुमार शुक्ल, अखिल 'व्यथित', राम कुमार गुप्त, गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र', अनिल श्रीवास्तव, सुनील बाजपेयी, नरेन्द्र भूषण, मनोज शुक्ल 'मनुज', राजा भइया गुप्ता 'राजाभ', गोबर गणेश, डा.नलिनी खन्ना, रवीन्द्र नाथ तिवारी, योगेश सिंह, सुभाष गुरूदेव, चेतराम अज्ञानी, शिवनाथ सिंह आदि कवियों ने अपने काव्यपाठ से श्रोताओं को रससिक्त किया। कार्यक्रम का संचालन हरिप्रकाश 'हरि' ने किया। *(गौरीशंकर 'विनम्र')*

लखनऊ-समाचार

आर्य समाज के इतिहास का एक स्वर्णिम पृष्ठ

डालीगंज आर्य समाज का शताब्दी महोत्सव

१६, १७, १८ सितम्बर २०१५ की तिथियाँ जनता के दिलों पर अपनी अमिट छाप छोड़ गईं। इन तिथियों में लखनऊ की प्राचीनतम आर्य समाज डालीगंज (हसनगंज पार) ने अपनी स्थापना के १०० वर्ष पूरे किये। शताब्दी समारोह रामाधीन सिंह इण्टर कॉलेज, बाबूगंज, लखनऊ के छत्रपति शिवाजी सभागार में सम्पन्न हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा द्वारा ओम् ध्वजारोहण के साथ समारोह की शुरूआत हुई।

आर्ष कन्या गुरुकुल की प्रचार्या एवं कन्याओं द्वारा वेदपाठ श्रोता समूह

रूढ़िवादी मत-मतान्तारों पर विजय के प्रतीक के रूप में यज्ञ का शुभारंभ हुआ; जिसमें ब्रह्मा के आसन को वेदों की प्रख्यात विदुषी आचार्या प्रियंवदा वेदभारती ने सुशोभित किया तथा गुरुकुल नजीबाबाद की कन्याओं ने सुमधुर वेद पाठ तथा सुरीले गायन से सभी का मन मोह लिया।

समारोह में राष्ट्ररक्षा सम्मेलन (१६.०६.१५) तथा वेद सम्मेलन (१७.०६.१५) एवं स्मारिका विमोचन (१८.०६.१५) विशेष आकर्षण के केन्द्र बने। सम्मेलनों को स्वामी आर्यवेश, पीठासीन प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, श्री आनन्द कुमार आर्य, कार्यकर्ता प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, स्वामी धर्मेश्वरानन्द, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र., संस्कृत साहित्य के विद्वान् डॉ.प्रशस्यमित्र शास्त्री, रायबरेली, आचार्या प्रियंवदा वेदभारती, आर्ष गुरुकुल नजीबाबाद, स्वामी सौम्यानन्द सरस्वती, पं.सन्तोष कुमार वेदालंकार, आचार्य विश्वव्रत शास्त्री, श्रीमती प्रियंका शास्त्री, डॉ.वेद प्रकाश आर्य, आचार्य रामकृष्ण शास्त्री, भजनोपदेशक श्री कैलाश कर्मठ, श्री सत्यप्रकाश आर्य ने अपने सम्बोधनों से नई ऊँचाइयों तक पहुँचा दिया।

पं.दीनानाथ शास्त्री के साथ श्री प्रेमशंकर शुक्ल स्मारिका का विमोचन

स्वल्पावधि में अत्यंत भव्य स्मारिका श्री दीनानाथ शास्त्री ने डॉ.वेद प्रकाश आर्य (प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता) के सान्निध्य में सम्पादित एवं प्रकाशित करके असंभव को संभव बना दिया। १८.०६.१५ को जब स्वामी आर्यवेश ने स्मारिका का विमोचन किया तो मंच पर शताब्दी समारोह को सफल बनाने वाले समस्त कार्यकर्ताओं एवं अतिथियों का समूह मौजूद था। वस्तुतः सम्पूर्ण समारोह को सफल बनाने में श्री दीनानाथ शास्त्री का योगदान भुलाया नहीं जा सकता; जिन्होंने कई दिन पूर्व अमेठी से लखनऊ में रहकर सभी व्यवस्थाओं को मूर्त रूप प्रदान किया। जीवन पर्यन्त आर्य समाज के सेवाव्रती विद्वानों- आचार्य ओजोमित्र शास्त्री तथा महात्मा जलेश्वर मुनि जी को सम्मानित करके शताब्दी समारोह ने अपनी कृतज्ञता का ज्ञापन किया।

इस बृहद् उपक्रम को सफल बनाने में आर्य समाज डालीगंज के कार्यकर्ताओं की समर्पित टीम ने रातदिन एक कर दिया। पं.प्रेमशंकर शुक्ल के प्रधानत्व में श्री देवेन्द्र नाथ चौधरी, डॉ.अरविन्द नाथ पाण्डेय, आनन्द चौधरी एडवोकेट, सेवक राम आर्य, आलोक चौधरी, के सम्मिलित प्रयासों ने सम्मेलन को गौरवान्वित कर दिया। इस टीम को स्वामी वीरेन्द्र सरस्वती परिव्राजक का संरक्षण सुलभ रहा।

कु.वैशाली

सम्मेलन की सुव्यवस्था सराहनीय ही नहीं, अनुकरणीय थी। मंत्र की साज सज्जा, अतिथियों के बैठने की व्यवस्था, दर्शकों, श्रोताओं की सुविधाओं को दृष्टिगत रखना, जलपान, भोजन इत्यादि सभी व्यवस्थाएँ चाक चौबंद थीं। आर्य वीरांगना दल की स्वयंसेविकाओं ने कुमारी वैशाली के नेतृत्व में अहम् भूमिका निभाई।

समारोह की शुरूआत यदि आचार्या प्रियंवदा ने की तो समापन संगीत डॉ. निष्ठा विद्यालंकार ने प्रस्तुत किया। समस्त कार्यक्रम प्रधान श्री प्रेमशंकर शुक्ल के निर्देशन में सम्पन्न हुए। शान्तिपाठ के पूर्व प्रधान जी ने सहयोग प्रदान करने हेतु सभी क्षेत्रों के प्रति आभार व्यक्त किया। स्वागताध्यक्ष श्री सूर्यकुमार वर्मा 'पार्षद' को विशेष ध न्यवाद देते हुए प्रधान जी ने उनकी उन्नति और समृद्धि की कामना व्यक्त की। अंत में सामूहित प्रीतिभोज की सुंदर व्यवस्था का सभी ने रसास्वादन किया।

(आर्य लोक वार्ता न्यूज डेस्क)

मंत्री आनन्द चौधरी द्वारा आभार प्रदर्शन

परमेश्वर की महती अनुकम्पा से आर्य समाज डालीगंज लखनऊ का शताब्दी समारोह उल्लासपूर्ण आशा-विश्वास का संदेश देकर सम्पन्न हो गया। समारोह को सफल बनाने में आर्य समाज डालीगंज के प्रधान जी एवं समस्त पदाधिकारियों, सदस्यों एवं सहयोगकर्ताओं के प्रति आभार व्यक्त करना अपना कर्तव्य समझता हूँ जिन्होंने उत्कट टीम भावना के साथ कार्य करते हुए समारोह को सफल बनाया है। क्षेत्र के पार्षद श्री सूर्य कुमार वर्मा का भी मैं आभारी हूँ, जिन्होंने रामाधीन सिंह इंटर कालेज का परिसर हमें कार्यक्रम सम्पन्न करने हेतु प्रदान करने की उदारता दिखाई। आर्य जगत के जिन विद्वानों, उपदेशकों, संन्यासियों, भजनोपदेशकों (तबला वादक श्री राजाराम जी, कोलकाता सहित) ने पधार कर समारोह को गौरव प्रदान किया उन सभी को भी धन्यवाद देता हूँ। सभागार की साजसज्जा, यज्ञ की व्यवस्था, भोजन जलपान की व्यवस्था इत्यादि में संलग्न कार्यकर्ता, स्वयंसेवकगण भी साधुवाद के पात्र हैं। वैदिक विद्वान् श्री दीनानाथ शास्त्री ने अस्वस्थ होते हुए भी अमेठी से लखनऊ में प्रवास करके समारोह के संचालन, संयोजन, स्वल्पावधि में स्मारिका के प्रकाशन जो भागीरथ प्रयास किया उसके लिए मैं उनका कृतज्ञ हूँ। सबसे अधिक लखनऊ की आर्य समाजों के सदस्यों, आर्य उपप्रतिनिधि सभा के अधिकारियों तथा जन सामान्य का आभारी हूँ जिन्होंने अपनी उपस्थिति से समारोह को ऐतिहासिक सफलता प्रदान की।

-आनन्द चौधरी

आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह-2015

विज्ञापनों के इस युग में बिना एक भी विज्ञापन के निरन्तर सत्रह वर्षों से प्रकाशित होने वाले आपके प्रिय 'आर्य लोक वार्ता' हिन्दी मासिक के १८वें वर्ष में प्रवेश के अवसर पर 'आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह-२०१५' दि. १२ दिसम्बर २०१५ को सायं ५ से ६ बजे तक राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह, कैसरबाग, लखनऊ मे सम्पन्न होगा। इस अवसर पर सुयोग्य प्रतिभाओं का सम्मान, उपाधि प्रदान, स्मृति सम्मान, 'वैदिक यज्ञ प्रकाश' का विमोचन, चुनिन्दा कवियों का काव्यपाठ, नारियों द्वारा वेदमंत्रों का सस्वर पाठ तथा सुललित संगीत एवं गीतगायन के रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जायेंगे। अनुरोध है कि अधिक से अधिक संख्या में समय से पहुँचकर अपना स्थान ग्रहण करें तथा अपने आशीर्वाद एवं सहयोग द्वारा वैदिक विचारधारा के प्रचार-प्रसार के इस महान अभियान में अपना योगदान दें।

विशेष अनुरोध

'आर्य लोक वार्ता' किसी संस्था अथवा व्यक्ति विशेष का पत्र नहीं है, वरन् आप सबकी सद्भावना का पत्र है, जो अपनी गुणवत्ता की दृष्टि से देश के हिन्दी मासिक पत्रों में अपना विशिष्ट स्थान बना चुका है। अस्तु, हम सभी सहयोगकर्ताओं से 'आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह-२०१५' हेतु रु.पांच हजार, दस हजार अथवा पन्द्रह हजार के आर्थिक सहयोग की अपेक्षा करते हैं। हम अपने सहयोग कर्ताओं का आभार प्रकट करते हैं तथा उन्हें यथाशक्ति सम्मानित भी करते हैं। स्मरण रखें, आपका यह सहयोग उस सहयोग राशि के अतिरिक्त है, जो आर्य लोक वार्ता की सदस्यता (सामान्य, होता, ऋत्विक्, संरक्षक या प्रतिष्ठापक) हेतु दानस्वरूप प्रदान किया जाता है।

-डॉ.वेद प्रकाश आर्य

आर्य समाज तेलीबाग का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज तेलीबाग, उत्तरेठिया, लखनऊ का वार्षिकोत्सव १६ से २२ नवम्बर २०१५ तक समारोह पूर्वक बलदेव विहार, तेलीबाग पूर्व में मनाया जायगा। उत्सव में विशेष रूप से वैदिक विद्वान् पं.विष्णुमित्र वेदार्थी एवं सुश्री अंजली आर्य भजनोपदेशक हरियाणा पधार रही हैं। आर्य समाज के पदाधिकारियों ने जनता से अधिकाधिक संख्या में भाग लेने की अपील की है। प्रतिदिन प्रातःकाल एवं सायंकाल यज्ञ, भजन, प्रवचन और व्याख्यान होते रहेंगे। *(रमेशचन्द्र आर्य, मंत्री)*

जाको राखे साँइयाँ...

परमात्मा कभी कभी अपने उपासकों की किस प्रकार सहायता करता है, इसका एक जीता जागता उदाहरण दि. ०६.०६.१५ को देखने को मिला; जबकि आर्य समाज लालबाग के कोषाध्यक्ष तथा भाषा प्रतिष्ठापन परिषद् के संयोजक- वयोवृद्ध, सतत् कार्यशील डॉ. मोहनलाल अग्रवाल (से.नि.कृषि उपनिदेशक) इलाहाबाद जाने के लिए चारबाग रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नं.८ पर पहुँचे।

वहाँ उन्हें यह बताया गया कि यह ट्रेन तो ३ घंटे लेट है किन्तु प्लेटफार्म नं.३ से एक अन्य ट्रेन अभी छूटने वाली है। प्लेटफार्म ८ से ३ पर पहुँचते ही ट्रेन चल पड़ी। डॉ.अग्रवाल ने जैसे ही चलती ट्रेन के अंतिम डिब्बे में चढ़ने की चेष्टा की; हाथ फिसला उनका और वे ट्रेन तथा प्लेटफार्म के बीच में आ गये। ट्रेन तो चली गई किन्तु डॉ. अग्रवाल बालबाल बच गये। उनके पैर में घुटनों के ऊपर खरोंच के अलावा कोई चोट नहीं आयी। इसे ईश्वर की कृपा के अलावा और क्या कहा जायगा!

आर्य समाज कैण्ट सदर का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज कैंट सदर बाजार लखनऊ का वार्षिक उत्सव ८ सं ११ अक्टूबर २०१५ तक आर्य समाज मंदिर सदर बाजार लखनऊ के प्रांगण में समारोह पूर्वक मनाया गया। उत्सव में वेद विदुषी डॉ.श्रीमती निष्ठा विद्यालंकार, लखनऊ; जाने माने वैदिक विद्वान् पं.शिवदत्त पाण्डेय, सुल्तानपुर; पं.सन्तोष कुमार वेदालंकार, पं.अखिलेश शास्त्री लखनवी, पं.वीरेन्द्र के अलावा ख्यातिलब्ध भजनोपदेशक पं. श्यामवीर राघव, नई दिल्ली को आमंत्रित किया गया। रोजाना प्रातः ७ से १० बजे तक यज्ञ, भजन, प्रवचन तथा सायं ६ से ६ बजे तक संध्या, भजन एवं व्याख्यानों का सिलसिला अबाध गति से चलता रहा। यज्ञ का संचालन एवं आचार्यत्व पं. अखिलेश शास्त्री ने किया। इस अवसर पर शोभायात्रा निकाली गई तथा समापन दिवस पर ऋषिभोज की व्यवस्था की गई। उत्सव में प्रत्येक सत्र किसी न किसी विषय को लेकर आयोजित किया गया। मुख्य विषय थे योग से जीवन का परिवर्तन, ईश्वर का वैदिक स्वरूप, ईश्वर प्राप्ति का एकमात्र मार्ग, संस्कारों की आवश्यकता, राष्ट्रनिर्माण, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नारी की भूमिका, राष्ट्र सर्वोपरि है। आर्य उपप्रतिनिधि सभा, लखनऊ का पूर्ण सहयोग कार्यक्रमों को सुलभ रहा।

(सच्चिदानंद गुप्त, मंत्री)

नगर आर्य समाज लखनऊ

नगर आर्य समाज, रकाबगंज, लखनऊ में ०४.१०.१५ को गुरुवर विरजानंद के नाम पर नवीन सभागार का उद्घाटन समारोह सम्पन्न हुआ। उद्घाटन श्री लाल जी टंडन, पूर्व सांसद ने किया। श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र. ने समारोह को सम्बोधित किया। इस अवसर पर आर्य समाज की आजीवन सेवा करने वाले श्री इकबाल शंकर श्रीवास्तव, श्रीमती आशा अग्रवाल एवं श्री कृष्ण कुमार आर्य को सम्मानित किया गया।

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
डॉ० वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-19/838, प्रथम तल, रिंगरोड, इन्दिरानगर, लखनऊ-226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
9795445800

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
9450500138

E-mail-
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
व्रती सदस्य	–	250 रु. वार्षिक
ऋत्विक् सदस्य	–	1,200 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	2,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	12,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	50,000 रु.

सहयोग राशि निम्न बैंकों की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है-

(1) बैंक-बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 46900 1000 00651
खाते का प्रकार-बचत खाता

(2) बैंक-इलाहाबाद बैंक, ए-869, इन्दिरा नगर, लखनऊ।
IFSC - ALLA0211122
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 5022 3541 717
खाते का प्रकार-बचत खाता

प्रतिष्ठापक
श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार
डॉ. रजत बत्रा, लखनऊ

संरक्षक
श्री अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा, राजस्थान
श्रीमती प्रमोद कुमारी, लखनऊ
श्रीमती शालिनी कुमार, लखनऊ
श्री कौशल किशोर श्रीवास्तव, लखनऊ
श्री जगदीश लाल खत्री, लखनऊ
श्रीमती कुसुम वर्मा, लखनऊ
डॉ. रूपचन्द्र 'दीपक', लखनऊ
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री रघुनाथ सिंह आर्य, कानपुर
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई
श्री अखिल मित्र शास्त्री, लखनऊ

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-२, हिमांशु सदन, ५-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' ५३६क/२३४ हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

आर्य्य लोक वार्ता : पत्र नहीं स्वाध्याय है - एक नया अध्याय है।